ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 24 नवम्बर 2013 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 24 नवम्बर, 2013 से 30 नवम्बर 2013

मार्गशीर्ष कृ.–06 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 83, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. ईस्ट आफ लोनी रोड में लगा वैदिक चेतना शिविर

डीएवी. पब्लिक स्कूल, ईस्ट आफ लोनी रोड दिल्ली में एक दिवसीय वैदिक चेतना शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में वैदिक परम्परा का निर्वाह करते हुए विद्यार्थियों ने योगासन किये। शिविर का शुभारम्भ प्रातः कालीन देवयज्ञ से हुआ। शिविर के उद्‌घाटन अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमति समीक्षा शर्मा ने विद्यार्थियों को शिविर की उपयोगिता बताते हुए कहा कि ''हमारे जीवन को सही दिशा देने का कार्य नैतिक शिक्षा करती है तथा इस प्रकार के वैदिक चेतना शिविर नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाने की राह दिखाते हैं। हम सौभाग्यशाली कि डी.ए.वी. जैसी संस्था से जुडे हैं जिसमें इस प्रकार के शिविरों द्वारा नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती हैं'' दीपावली के प्रसंग में श्रीमती शर्मा कहा ''हमें पटाखे नहीं चलाने चाहिएँ। वातावरण को शुद्ध बनाने में सहयोग करना चाहिए''।

इस चेतना शिविर में विद्यार्थियों के लिये चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका विषय था ''हमारी संस्कृति हमारी धरोहर''। शिविर में विद्यार्थियों को खेलकूद द्वारा शरीर को स्वस्थ रखने वाली बातें बताई गईं। द्वितीय सत्र में भजन–गायन एवं मंत्रोच्चारण का कार्यक्रम हुआ। जिसमें विद्यार्थियों ने विश्व मैत्री का संदेश प्रदान करने वाले भजन प्रस्तुत किये एवं मंत्रोच्चारण किया। छात्रों ने स्वामी दयानन्द एवं महात्मा हंसराज के जीवन पर लघु चलचित्र प्रस्तुत किये। चलचित्रों को देखकर विद्यार्थियों ने उन महापुरुषों के महत्त्वपूर्ण कार्यों और चरित्रिक गुणों को जाना तथा उनको जीवन में धारण करने का संकल्प लिया। विद्यार्थियों ने इस नवीन गतिविधि में हार्दिक रुचि ली तथा इच्छा व्यक्त कि ऐसे प्रेरणादायक वैदिक चेतना शिविर प्रत्येक माह में आयोजित कियें जायें।

वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार में चौथा चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ सम्पन्न

हरिद्वार में स्थित महर्षि दयानन्दजी की कर्मभूमि वैदिक मोहन आश्रम में चारों वेदो की पावन ऋचाओ से चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। जो दिनांक 13–10–2013 दिन रविवार से 20–10–2013 दिन रविवार तक आयोजित किया गया। इस यज्ञ का ध्वजारोहण श्रीमान ब्रिगेडियर ए. के. अदलखा जी ट्रस्टी वैदिक मोहन आश्रम, एवं निदेशक (प्रशासन) डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के द्वारा सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा योगाचार्य अरविंद शास्त्री जी (गुरूकुल लाक्षागृह बरनावा, बागपत) रहे। यज्ञ संयोजक का कार्य श्रीमान यशबीर सिंह जी (प्रधानाचार्य–बी.एम.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, हरिद्वार) की देखरेख में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के लिए प्रयुक्त पांच वेदियों में से एक वेदी विज्ञानशाला के रूप में प्रयोग की गई जिसमें चारों वेदों से चुनकर के कुछ विशेष मंत्रो से आहुतियाँ प्रदान की गई। इस अवसर पर करनाल, मोदीनगर, रुड़की मेरठ, करनावल, आदि अनेक स्थानों भारत के कोने–कोने से अनेक विद्वान् व यजमान व्यक्ति भाग लेने हरिद्वार पहुँचे।

गुरूकुल लाक्षागृह बरनावा के सुयोग्य आचार्यों श्रीमान जयवीर शास्त्री, श्रीमान राजीव शास्त्री जी, श्रीमान विजयपाल शास्त्री व गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सस्वर वेदपाठ किया। पूर्णाहुति के अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा–योगाचार्य अरविंद शास्त्री जी ने सभी को उद्‌बोधन देते हुए कहा कि यज्ञ परमात्मा को प्राप्त करने का मुख्य साधन है। यज्ञ के द्वारा ही मनुष्य परमात्मा के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। यज्ञ संयोजक श्रीमान यशबीर सिंह जी ने बाहर से पधारे सभी महानुभावों को धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. फिल्लौर के छात्रों ने जीता 'सुभाग फाउंडेशन' पुरस्कार

सुभाग फाउंडेशन' (सोशल अपलिफ्टिंग एंड बिल्डिंग हेल्थकेयर एट ग्रासरूट्स–ए पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट) द्वारा पोस्टर डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभिन्न श्रेणियों में विभिन्न स्कूलों के कुल 220 विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। डी.ए.वी. विद्यालय के विद्यार्थियों ने इसमें कई पुरस्कार जीते। अधिकतम प्रविष्टियों के लिए विद्यालय को ट्राफी भी प्रदान की गई। पोस्टर डिजाइन के लिए भारत के विकास एवं स्थिति से संबंधित अलग–अलग विषय दिए गए थे। छात्रों द्वारा प्राप्त किए गए पुरस्कारों का विवरण इस प्रकार है। इशान गोयल (XI– विज्ञान) ने पथम स्थान पर रहकर कैमरा, जाह्नवी (XI– विज्ञान) तथा यश कुमार (VII) ने तृतीय स्थान प्राप्त कर टैब तथा कपिल मल्ल (IX) ने सांत्वना पुरस्कार के रूप में हैड फोन प्राप्त किए। सभी विजेता विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र भी दिए गए। पुरस्कार वितरण समारोह दिल्ली में आयोजित किया गया जिसमें श्रीमती श्याम चोना (पदमश्री एवं पदम भूषण) के हाथों पुरस्कार प्रदान किए गए। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री योगेश गंभीर ने विजेता विद्यालय को हार्दिक बधाई दी।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 24 नवम्बर, 2013 से 30 नवम्बर, 2013

जीवन-यज्ञ अविच्छिन्न रहे

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

घृतस्य जूतिः समना सदेवा, संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती।
श्रोत्रं चक्षुः प्राणोऽच्छिन्नो नो अस्तु, अच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः।।

अथर्व 16.58.1

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **यज्ञः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(घृतस्य)** आत्मतेज–रूप घृत की **(जूतिः)** वेगवती धारा **(समना)** मन–सहित [और] **(सदेवा)** इन्द्रियों–सहित **(संवत्सरं)** शत–संवत्सर जीवन –यज्ञ को **(हविषा)** हवि से **(वर्धयन्ती)** बढ़ाती [रहे]। **(नः)** हमारा **(श्रोत्रं)** श्रोत्र, **(चक्षुः)** नेत्र [और] **(प्राणः)** प्राण **(अच्छिन्नः अस्तु)** अच्छिन्न रहे। **(वयं)** हम **(आयुष)** आयु से [तथा] **(वर्चसः)** वर्चस्विता से **(अच्छिन्नाः)** अच्छिन्न [रहें]।

● मनुष्य का जीवन सौ या सौ से भी अधिक वर्ष तक चलनेवाला एक यज्ञ है, जिसे 'शत–संवत्सर यज्ञ' भी कहा है जाता है। हम चाहते हैं कि हमारा यह यज्ञ निर्विघ्न चलता रहे। जैसे बाह्य यज्ञ तभी प्रवृत्त रह सकता है, जब उसमें यजमान और ऋत्विजों द्वारा निरन्तर हवि की आहुति पड़ती है, वैसे ही हमारे इस शरीर यज्ञ के निर्बाध चलते रहने के लिए भी यह आवश्यक है कि इसका यजमान और इसके ऋत्विज् इसे हवि द्वारा बढ़ाते रहें। आत्मा ही इस का 'यजमान' है, मन 'ब्रह्म' है, प्राण 'उद्गाता' है, वाणी 'होता' है चक्षु 'अध्वर्यू' है। अतः आत्मा की आत्म–तेज–रूप घृत की आहुति, मन की प्रबल संकल्प की आहुति और सब ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों की अपनी–अपनी ज्ञान–कर्म–रूप हवियों की आहुति हमारे इस 'शत–संवत्सर' जीवन–यज्ञ में पड़ती रहनी चाहिए। यदि आत्मा, मन और इन्द्रिय–देव इस यज्ञ में सहायक नहीं होंगे,तो हमारा यह जीवन – यज्ञ समय पूर्व ही विच्छिन्न हो जाएगा। अतः हमारे श्रोत्र, नेत्र, प्राण आदि की शक्तियाँ प्रअक्षुण्ण रहनी चाहिएँ, जिससे हम चिर–काल तक कानों से शब्द, नेत्रों से रूप, नासिका से गन्ध, रसना से रस, त्वचा से स्पर्श का ग्रहण कर सकें और प्राण–अपना आदि की क्रियाओं को सम्यक् प्रकार से करते रहें। यदि हमारी ये इन्द्रियाँ दुर्बल, या अशक्त हो जाती हैं तो हमारे जीवन की वही अवस्था होगी, जो ऋत्विजों के दुर्बल, अशक्त या उदासीन हो जाने पर यज्ञ की होती है। यदि आयु से तथा वर्चस्विता से अच्छिन्न रहना चाहते हैं, तो हमें अपने जीवन–यज्ञ के यजमान और ऋत्विजों को सबल, सशक्त और निरन्तर जागरूक रखना होगा। हे मेरे आत्मन्! हे मन! हे प्राण! हे इन्द्रिय–देवो! तुम जागते रहो, जीवन–यज्ञ में हवि डालते रहो, यज्ञ को प्रज्वलित, प्रवृद्ध, अच्छिन्न तथा वर्चस्वी बनाये रहो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्व-ज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने बताया कि ब्रह्मचर्य भी एक यज्ञ है। छान्दोग्योपनिषद् के आधार पर ब्रह्मचर्य के द्वारा ही परमात्मा को पा सकते है। 'सत्रायण' भी वास्तव में ब्रह्मचर्य है।

इसके बाद यज्ञ को लोक–परलोक सुधारने वाला कहकर शतपथ ब्राह्मण में आई जनक जी द्वारा याज्ञवल्क्य जी से पूछे गए छः प्रश्नों की बात बताई। यज्ञ में डाली गई आहुतियां जिस प्रकार औषध, अन्न और उससे वीर्य को प्राप्त होती हैं वैसे ही सूक्ष्म रूप धारण करके यजमान के अन्तः करण में भी प्रवेश कर जाती हैं। आहुतियों का एक सूक्ष्म रूप आकाश में प्रवेश करता है तो दूसरा संस्कार रूप में अन्त करण में।

गृहस्थी भी किस प्रकार ब्रह्मचर्य–पालन कर सकता है इस पर मनु–महाराज के कथनानुसार वर्णन किया और बताया कि नियमानुकूल ब्रह्मचर्य धारण करने वाले के मन, बुद्धि, इन्द्रिय और शरीर में अपूर्व शक्ति प्रकट हो जाती है।

शरीर को स्वस्थ बनाये रखने के तीन साधनों –आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य का लाभ लेकर मानव जीवन के उद्देश्य की ओर तीव्रता से अग्रसर होने का संदेश दिया गया।

अब आगे.....

प्राणायाम तथा ध्यान

वर्णन तो यह हो रहा था कि प्राण तथा मन का एक–दूसरे के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है और इन दोनों को निरुद्ध करने के दो मुख्य साधन 'प्राणायाम और ध्यान' हैं और ये दोनों तभी सिद्ध होते हैं जब आसन दृढ़ हो जाय। आसन दृढ़ करने के लिए शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है, इसीलिए शरीर के तीन उपस्तम्भों–आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य का प्रकरण बीच में आ गया।

प्राणायाम ही तप है

अब फिर मन तथा प्राण की ओर ध्यान कीजिये और प्राणायाम तथा ध्यान का मूल्य समझिये।

प्राणायाम एक ऐसा तप है जिससे भीतर के सब मल नष्ट होते बतलाए जाते हैं। पंचशिखाचार्य–प्रणीत सांख्य–सूत्र में पूरे बल से यह कहा है:

तपो न परं प्राणायामात्ततो, विशुद्धिर्मलानां दीप्तिश्च ज्ञानस्य।।19।।

'प्राणायाम से बढ़कर और तप नहीं है। प्राणायाम से मलों की शुद्धि होकर ज्ञान का प्रकाश होता है।'

जब प्राणायाम से अन्दर के मलों की शुद्धि हो जाती है और राग–द्वेष मिटकर ज्ञान का प्रकाश हो जाता है, तब क्या होता है? इसका अनुभव इससे अगले सूत्र में पंचशिखाचार्य यह बतलाते हैं कि:

तमणुमात्रमात्मानमनुविद्यास्मीत्येवं तावत् संप्रजानीते।।20।।

'उस अणुमात्र आत्मा को ढूँढकर 'यह हूँ' इस प्रकार ठीक–ठीक जान लेता है।'

मनु भगवान् ने प्राणायाम के सम्बन्ध में यह कहा है कि:

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्।।
प्राणायामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्च किल्विषम्।
प्रत्याहारेण संसर्गान्ध्यानेनानीश्वरान्गुणान्।।

मनु० 6.71–72.

'जैसे धातुओं (सुवर्णादि) के मैल अग्नि में धौंकने से फुँकते हैं, वैसे ही प्राण के रोकने से इन्द्रियों के दोष जल जाते हैं'।।71।।

'प्राणायाम से रोगादि दोषों को, धारणा से पाप को, इन्द्रियों के रोकने से विषयों के संसर्गों को और ध्यानादि से मोहादि गुणों को जला दे'।।72।।

प्राणायाम हानिप्रद कैसे?

परन्तु प्राणायाम को कुछ ऐसा जटिल–सा बना दिया गया है कि सर्व–साधारण प्राणायाम का नाम सुनते ही यह कहते सुने जाते हैं कि– "यह तो बहुत कठिन साधन है और रोग उत्पन्न करनेवाला है।" मैं यह मानता हूँ कि कितने ही व्यक्तियों का स्वास्थ्य बिगड़ता देखा गया है। कुछ तो कान खो बैठे हैं, कुछ आँखों और एक को तो उन्मत्त हुआ भी देखा गया है, परन्तु इसका कारण प्राणायाम नहीं, अपितु प्राणायाम

www.thearyasamaj.org

का दुरुपयोग है। यदि प्राणायाम विधि से न किया जाय, भरे पेट, जुकाम में या ऋतु–प्रतिकूल किया जाय, तीव्र वायुवेग में किया जाय और आहार का ध्यान रखे बिना, शुद्ध घी–दूध का प्रबन्ध किये बिना किया जाय तो हानि होना असम्भव नहीं, परन्तु यदि विधि– अनुसार, बुद्धि–पूर्वक, गुरु–शिक्षानुसार किया जाय तो अवश्य पूरा लाभ देगा।

प्राणायाम का तत्त्व

प्राणायाम क्या है? महर्षि पतंजलि के कथनानुसार :

तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः।

योग० 2.46.।।

'श्वास–प्रश्वासों की गति–विच्छेद का नाम प्राणायाम है।' मुनि ने यह भी बतलाया कि प्राणायाम के चार भेद हैं– (1) बाह्य विषय, (2) आभ्यन्तर, (3) स्तम्भवृत्ति, और (4) बाह्याभ्यन्तराक्षेपी। इसकी विधि यह है:

प्राणायाम की विधि

1. राग–द्वेष इत्यादि से रहित, प्रसन्नचित्त, पवित्र और उत्साह से भरपूर साधक ऐसे आसन पर बैठे जो गुदगुदा हो। पद्म, सिद्ध, स्वस्तिक अथवा सुखासन में बैठकर ग्रीवा तथा पीठ सीधी रखे, न बहुत अकड़े, न झुककर बैठे, आसन पर इस प्रकार बैठकर अपने प्राणों की गति पर ध्यान दे। यदि सूर्य–स्वर (दक्षिण) चल रहा हो तो उसे पहले चन्द्र में परिवर्तित कर ले।

2. दक्षिण बगल में वाम हाथ की मुट्ठी रखकर बाहु से जोर से दबाये तो थोड़ी देर में चन्द्र–स्वर चलने लगेगा। चन्द्र–स्वर जब चलने लगे तो फिर कोमल भस्त्रा करके समस्वर कर ले। समस्वर होने पर जो प्राणायाम किया जायेगा, वह सफलता देनेवाला होगा।

3. प्रातः और सायं ही प्राणायाम के लिए उपयुक्त समय हैं।

(1) जब सम स्वर हो जाय तो पहले प्राण को अन्दर से बाहर, धीरे–धीरे फेंको, फिर धीरे–धीरे भीतर ले आओ। तीन–चार बार ऐसा करने के पश्चात् अब श्वास को पूर्णतया बाहर फेंको और जब तक सहन हो सके उसे बाहर ही रोके रखो, इसी को बाह्य–विषय कहते हैं।

(2) जब सहन न हो सके तो प्राण को धीरे–धीरे भीतर ले आओ और पेट नाभि–पर्यन्त भर लो। अब इस प्राण को धीरे–धीरे बाहर निकालना शुरु करो और निकालते–निकालते पेट को भीतर की ओर सिकोड़ते चले जाओ और श्वास को फिर बाहर ही रोक दो। घबराहट प्रतीत होने लगे तो फिर प्राण भीतर ले आओ। यही रेचक, पूरक और कुम्भक प्राणायाम हैं।

(3) स्तम्भवृत्ति प्राणायाम यह है कि श्वास को बाहर या भीतर लाये बिना ही, जैसे श्वास चल रहा है, उसे जहाँ–का–तहाँ एकदम रोक दिया जाय और यथाशक्ति रोके रखा जाय।

(4) एक और रूप प्राणायाम का यह है कि जब प्राण अन्दर से बाहर जा रहे हों तो उन्हें बाहर जाने से रोक देना और बाहर से प्राण अन्दर ले जाना, या इसके उलट अन्दर आनेवाले प्राण को रोक देना और अन्दर से अधिक प्राण को बाहर ले जाना, इसी को बाह्याभ्यन्तराक्षेपी कहते हैं।

इन प्राणायामों को पूरी सावधानी से करें। जैसे सिंह को पकड़ने वाले बड़ी होशियारी से सिंह को पिंजरे में डाल देते हैं, इसी प्रकार प्राण को धीरे–धीरे वश में करना चाहिए; न तो उकताना चाहिए, न ही थोड़े समय में 'सिद्ध' बनने का यत्न ही करना चाहिए। पहले आधा मिनट, फिर धीरे–धीरे बढ़ाते–बढ़ाते प्राण–निरोध का समय बढ़ाते चले जाना चाहिए। बस, यही प्राणायाम है।

अब देख लीजिये कि इसमें कठिनाई कहाँ है? हाँ, हठ–योगानुसार नाना प्रकार के प्राणायाम हैं, जिनका कुछ वर्णन 'प्रभु–भक्ति' में किया जा चुका है। उसके अनुसार अब प्राण को भीतर ले–जाकर कुम्भक किया जाता है तो अधिक अभ्यास हो जाने पर प्राण तथा अपान दोनों का मिलाप हो जाता है। इससे मूलाधार में सोई शक्ति जाग्रत हो उठती है।

जिन प्राणायामों में रेचक, पूरक, कुम्भक, स्तम्भवृत्ति का वर्णन किया है, उन्हें निरन्तर जारी रखना चाहिए और निरोध की अवधि तक बढ़ाते चले जाना चाहिए। साथ ही मूलाधार से लेकर सहस्त्राधार ब्रह्मरन्ध तक यथाक्रम ध्यान भी करना चाहिए। इससे जहाँ प्राणा का निरोध होगा, वहाँ मन भी एकाग्र होने लगेगा।

प्राण और मन के सम्बन्ध में ये श्लोक अधिक प्रकाश डालने वाले हैं:

चित्तं प्राणेन सम्बद्धं सर्वजीवेषु संस्थितम् ।
रज्ज्वा यद्वत्सुसंबद्धः पक्षी तद्वदिदं मनः ।।
नानाविधैर्विचारैस्तु न बाध्यं जायते मनः।
तस्मात्तस्य जयोपायः प्राण एव हि नान्यथा।।

'मन प्राण के अधीन है। जैसे रज्जु से पक्षी बँधा रहता है, उसी तरह सब जीवों का चित्त भी प्राण के साथ बँधा हुआ है। यदि कोई चाहे कि मैं विचार द्वारा उस मन को वश में कर लूँ तो इस प्रकार तो मन बाध्य नहीं होता है। इसलिए मन के निरोध का एकमात्र उपाय प्राणायाम ही है।'

भगवान् कृष्ण और भी स्पष्ट रूप से यह आदेश देते हैं :

एवं समाहितमतिर्मामेवात्मानमात्मनि।
विचष्टे मयि सर्वातमज्योतिर्ज्योतिषि संयुतम्।।

'इस प्रकार प्राणायाम के द्वारा ध्यान करने से वशीभूत हो जाने पर जैसे एक ज्योति में दूसरी ज्योति मिलकर एक हो जाती है, ऐसे ही साधक अपने में मुझे और मुझ आत्मा में अपने को मिला देता है।'

प्राणायाम द्वारा प्राण को रोकते–रोकते जब अवधि बढ़ जाती है तो मन लय होने लगता है।

महर्षि दयानन्द का अनुभव

इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द ने यह आदेश दिया है :

"जैसे भोजन के पीछे किसी प्रकार से वमन हो जाता है, वैसे ही भीतर के वायु को बाहर निकाल के सुखपूर्वक जितना बन सके उतना बाहर ही रोक दे। पुनः धीरे–धीरे भीतर लेके पुनरपि ऐसे ही करे। इसी प्रकार बारम्बार अभ्यास करने से प्राण उपासक के वश में हो जाता है और प्राण के स्थिर होने से मन, मन के स्थिर होने से आत्मा भी स्थिर हो जाती है। इन तीनों के स्थिर होने के समय अपने आत्मा के बीच में जो आनन्दस्वरूप अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है, उसके स्वरूप में मग्न हो जाना चाहिए। जैसे मनुष्य जल में गोता मारकर ऊपर आ जाता है, फिर गोता लगा जाता है, इसी प्रकार अपनी आत्मा को परमेश्वर के बीच में बारम्बर मग्न करना चाहिए।" (ऋग्वेदादि–भाष्यभूमिका–उपासना विषय)

महर्षि दयानन्छ की यह अनुभूत विधि है।

एक और स्थान पर महर्षि स्वामी दयानन्द यह आदेश देते हैं :

"मन को चंचलता से छुड़ाके नाभि, हृदय, मस्तक, नासिका और जीभ के अग्रभाग आदि देशों में स्थिर करके, ओंकर का जप और उसका अर्थ जो परमेश्वर है, उसका विचार करना।" (ऋ० भा० भू०)

प्राणायाम द्वारा मन का निरोध करने का वर्णन हुआ। परन्तु सभी साधक प्राणायाम से लाभ उठाने में समर्थ नहीं होते हैं।

ओ३म् तथा गायत्री मन्त्र का जप

ऐसे साधकों को प्राणायाम से पूर्व ओ३म् या गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए। अनुभव ने बतलाया है कि विधिपूर्वक, पवित्र रहकर, यम–नियमों का पालन करते हुए यदि गायत्री मन्त्र के अर्थों को हृदयंगम करके 24 करोड़ जप किया जाय तो इस साधन से भी मन लय होने लगता है।

इसके साथ मन के लय का सबसे बड़ा उपाय ध्यान है।

ध्यान किस प्रकार?

मन तथा प्राण के निरोध का दूसरा मुख्य उपाय ध्यान है। ध्यान का अभिप्राय यह है कि आज्ञाचक्र (भृकुटि), ब्रह्मरन्ध अथवा हृदय–प्रदेश या शरीर के किसी स्थान पर मन को इस प्रकार बाँध देना, जैसे कीला गाड़कर पशु बाँध दिया जाता है ओर वह पशु उस कीले ही के गिर्द, चक्कर लगाने लगता है तथा चक्कर लगाते–लगाते अन्त में थककर वहीं बैठ जाता है। इसी प्रकार जब साधक हृदय–प्रदेश में अथवा भृकुटि में मन को बाँध देगा और वहीं ध्यान लगाये रखेगा तो पहले–पहल तो मन बहुत उछल–कूद मचायेगा ओर भाग निकलने का यत्न करेगा, परन्तु जब साधक के ध्यान की रस्सी खूब दृढ़ होगी तो मन उसे तोड़ नहीं सकेगा; उसी परिधि में घूमता रहेगा और अन्त में थककर विश्राम करने लगेगा। यह सत्य है कि मन की गति कभी रुकती नहीं। समाधि–अवस्था में पहुँचनेवाले का भी यही अनुभव है कि मन की क्रिया निरन्तर जारी रहती है। हाँ, वह क्रिया इतनी सूक्ष्म हो जाती है कि शून्य–सी प्रतीत होने लगती है परन्तु गति अथवा क्रिया रहती अवश्य है।

मन निर्विषय कैसे?

अब यह शंका होगी कि सांख्य शास्त्र में तो ध्यान के सम्बन्ध में कहा गया है कि:

"ध्यानं निर्विषयं मनः।।" सांख्य० 6.25.

'मन को निर्विषय करने का नाम ही ध्यान है।'

इसका प्रयोजन क्या है? प्रयोजन तो यही है कि मन निर्विषय हो जाय। परन्तु निर्विषय का अभिप्राय यह है कि मन किसी भी बाह्य या भौतिक विषय का चिन्तन न करे। हाँ, एकाग्रता के लिए ब्रह्मतत्त्व का तो उसे चिन्तन करना ही होगा।

यदि एक कमरे में बहुत कूड़ा–कबाड़ और अन्य कई वस्तुएँ पड़ी हों और नौकर से यह कहा जाय कि 'इस कमरे को सर्वथा खाली करके साफ कर दो, इसके अन्दर कोई भी वस्तु रहने न पाय' और नौकर उसी प्रकार कमरे को साफ करके आकर यह कहे कि कमरा सर्वथा साफ कर दिया गया है और आप यह पूछें कि 'क्या कोई भी वस्तु उसमें नहीं रही? देख लिया है न तूने? कहीं किसी कोने अथवा खूँटी पर तो कोई वस्तु नहीं रह गई?' और नौकर जब यह कह दे कि 'अब कमरा सर्वथा निर्वस्तु होने पर भी उसमें वायु तो है ही।

इस प्रकार मन के अन्दर से अपने अभ्यास से धीरे–धीरे जब एक–एक करके संकल्पों–विकल्पों को निकालते चले जाएँगे और सांसारिक विषयों का सारा कूड़ा–कबाड़ आप निकाल देंगे एवं मन सर्वथा निर्मल और निर्विषय हो जायेगा; तो यह निर्विषय तथा निर्मल मन ब्रह्म–तत्त्व से तो भरपूर होगा ही, ब्रह्म–तत्त्व को तो कहीं बाहर फेंका नहीं जा सकता। अतएव मन को निर्विषय करने का प्रयोजन यही है कि मन को बाह्य विषयों और अनात्म पदार्थों से खाली कर दिया जाये।

शेष अगले अंक में....

www.thearyasamaj.org

'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है'

● हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

सारी सृष्टि सत्य विद्या के अनुसार ही रची गई है, इसलिये उनके पदार्थों को विविध विद्याओं के द्वारा ही जाना जाता है, यदि उन सबका आदि मूल परमेश्वर न होता तो विद्या विज्ञान के अनुसार जीवन उपयोगी पंचतत्वों का निर्माण कभी न हो पाता, क्योंकि किसको कैसे बनाना है, इन सब का ज्ञान प्रकृति में नहीं है। जैसे विद्यार्थी स्वयं विद्वान् नहीं बन सकता वैसे ही प्रकृति के परमाणु स्वयं कुछ नहीं बना सकते, जैसे आचार्य से शिक्षा पाकर विद्यार्थी विद्वान् बनता है वैसे ही सृजनकारक कण से सत् रज तम के परमाणु द्रव्यमान होकर सारे सृष्टि के कार्य कारण बनते हैं।

सृष्टि में तीन तत्व विद्यमान हैं– सर्वप्रथम ईश्वर है, जिसमें सारे सृष्टि तत्वों के ज्ञान मौजूद हैं और जिनकी शक्तियों से मानव उत्पत्ति काल में नैमित्तिक ज्ञान के रुप में वेदों को ऋषियों ने प्राप्त किया। (यह वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। परन्तु इस विद्या के पुस्तक को ध्यान में रखते हुए जब उनके मंत्रों का (वैदिक व्याकरण के अनुसार) सही भाष्य किया जायेगा तभी वह सब के लिये ईश्वरीय ग्रन्थ कहा जायेगा)।

दूसरा–सृष्टि रचने की सामग्री प्रकृति के परमाणु हैं और तीसरा जीवात्मा है जो शरीर बनाने वाले अन्नमय और रज–वीर्य के अणुओं से शरीरधारी प्राणियों को उत्पन्न करता है।

जिस प्रकार आत्मा शरीर को उत्पन्न करके उसमें व्याप्त होकर उसको धारण कर रहा है उसी प्रकार परमात्मा सारी सृष्टियों को उत्पन्न करके उन सबमें प्राण के समान व्यापक ओर पंचतत्व एवं सूर्य चन्द्रादि के माध्यम से सबका सर्वरक्षक बना हुआ है।

यदि सारे ब्रह्माण्ड में नियन्ता का नियम बुद्धिपूर्वक न होता तो आकाशगंगा आदि से उत्पन्न होकर निकलने वाले ज्वलन्त पिण्ड अथवा अन्य पिण्ड एक दूसरे से बराबर जैसे–तैसे टकराते रहते और नष्ट–भ्रष्ट होते रहते, किन्तु ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि ब्रह्माण्ड में उसने ऐसा वैज्ञानिक नियम बनाया है कि सबके सब परस्पर अपने एवं एक दूसरे के गुरुत्वाकर्षण के नियम से बंधे हुये रहते हैं। यह सौर जगत् एक परिवार है, यह दूसरे सौर जगत् के परिवार में प्रवेश नहीं कर सकता। परमात्मा की बड़ी विचित्र रचना है उनकी इन अनन्त रचनाओं का कोई पार नहीं पा सकता।

देखिये! सृष्टि बनने के पूर्व पंचतत्व को किस प्रकार बनाना है, इन सब का चयन और वैज्ञानिक चिन्तन के आधार पर ही (वैसे सर्वज्ञ ईश्वर कभी चिन्तन करता ही नहीं) सर्वप्रथम अन्तरिक्ष जो सृष्टि तत्वों के अणु–परमाणुओं से भरा हुआ था। उनमें सर्वप्रथम परमेश्वर ने अपने तपः सामर्थ्य से सत् के परमाणुओं में जब 'ऋत' क्रिया उत्पन्न की तब उनसे भौतिक तेज के पुंज सूर्य को उत्पन्न किया उसके पश्चात् वायु के अणुओं से वायु को और यौगिक जल 'मित्र और वरुण', अर्थात् हाइड्रोजन और आक्सीजन, एक विशिष्ट मात्रा (H^2O) में मिलने से जल की उत्पत्ति विस्तृत रुप में तब हुई जब रज और तम में कुछ 'सत' के अणु मिलने पर उसके समूहों से से ठोस भूमि की उत्पत्ति हुई, साथ ही परमात्मा ने उसके चारों ओर (**समुद्रादर्णवादधि**) जलपूर्ण समुद्र को उत्पन्न कर दिया। तात्पर्य यह कि भूमि का सृजनकारक सृष्टि के आदि में जल ही मौलिक तत्व था, वही पहले कोहरा कुरासारूप में था, उसके पश्चात् जलरूप में परिणत हो गया। इसी को वेद ने **'शरीरं छन्दः'** (यजु. 15,4) कहा है– जिस प्रकार मातृगर्भ में शिशु के चारों ओर कलल रस विद्यमान रहता है और उससे शिशु का संवर्धन एवं पोषण होता रहता है उसी प्रकार पृथ्वी के चारों तरफ से समुद्र के घेरे में रहने के कारण उसकी क्रम से सृष्टि हुई, ऐसा कहा जाता है। अतः सागर से भूमि का सम्बन्ध है। भूमि माता है, उससे अन्न और जल प्राप्त होता है। वायु और वनस्पति से प्राणियों को शुद्ध आक्सीजन (प्राण) प्राप्त होता है। अग्नि और बिजली से संसार के सारे कार्य हो रहे हैं

सूर्य और वायु के तापमान से सागर का जल वाष्प होकर ऊपर के त्रसरेणुओं से बादल बनकर जब हिमालय से टकराते हैं तब वायु के योग से वृष्टि होने लगती है और इस वृष्टि से भूमि द्वारा अन्नोपादन होने लगता है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर की कोई भी रचना निरर्थक नहीं है।

इसका ज्ञान किसको था कि प्राणियों को उत्पन्न करने से पहले वनस्पतियों को उत्पन्न करना चाहिये, इससे ज्ञात होता है कि सृष्टि रचयिता परमेश्वर को सारे विज्ञान की जानकारी थी। इसी प्रकार जब सारे प्राणियों की रचना हो चुकी तब कौन जानता था कि और किसकी उत्पत्ति शेष रह गई है, पर उस सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान को सब ज्ञात था तभी उसने सर्वश्रेष्ठ मानव मानवी को अनेक प्रकार के उपादानों के योग से उत्पन्न कर दिया।

जो अदृश्य में विद्यमान रहता है वही उसके अनुरूप कार्य कारणों के माध्यम से अवश्य प्रकट होता है और जो नहीं रहता वह कभी भी उत्पन्न नहीं होता। अतः मानव के बाद और कुछ भी उससे आगे बनाने के लिये बाकी नहीं रहा, इसलिये यह मानव ही शरीर धारी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ रचना है।

यह मानव ही दशों इन्द्रियों से युक्त है। अन्य प्राणियों में एक या दो इन्द्रियां लुप्त रहती हैं। अन्य प्राणियों में स्मरण शक्ति बहुत कम होती है, वे अपने जन्मदात्ता को कुछ ही महीनों में भूल जाते हैं, पर मनुष्य अपने जन्म दाता माता पिता को अंतिम अवस्था तक भी नहीं भूलते। मनुष्य में स्वाभाविक ज्ञान के अलावा नैमित्तिक ज्ञान भी होता है जो विद्याध्ययन से प्राप्त होता है। परन्तु अन्य प्राणियों में स्वाभाविक ज्ञान ही रहता है। पशु–पक्षियों में भाषा का ज्ञान स्वाभाविक होता है, पर मनुष्य को भाषा का ज्ञान अपने माता–पिता और आचार्य से सीखना पड़ता है।

मानव शरीर की बुद्धिपूर्वक रचना को देखकर ऐसा लगता है कि आदि में बड़े सूझ–बूझ के साथ विज्ञानस्वरुप परमात्मा ने पंचतत्व एवं सूर्य चन्द्रादि के योग से बनाया था। यदि आत्मा के लिये शरीर न बनाता तो किसी को कर्मों के सुख–दुःख रूप फल का बोध कैसे हो सकता था? अतः कर्मों का फल भोगने के लिये ही शरीरधारी प्राणियों की उत्पत्ति हुई है।

'अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः।

अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः।। (श्वेता. 4,5)

प्रकृति, जीव और परमात्मा तीनों अज अर्थात् जिनका जन्म कभी नहीं होता और न कभी ये जन्म लेते, अर्थात ये जगत् के तीन कारण हैं, इनका कारण कोई नहीं। इस अनादि प्रकृति का भोग अनादि जीव करता हुआ फंसता है और उसमें परमात्मा न फंसता और न उसका भोग करता है।

परमेश्वर द्वारा सृष्टि रचना का प्रयोजन जीवों के पूर्वजन्मों में किये कर्मों का फलभोग तथा मोक्षलाभ के लिये समुचित व्यवस्था करना है।

'भोगापवर्गार्थं दृश्यम्' सत्, रज, तम कारण प्रकृति से बना हुआ पंचभूत तथा इन्द्रिय रूप दृश्य संसार जीव के भोग तथा मोक्ष के लिये परमात्मा ने रचा है (–यो.द. 2.21.)। सृष्टि रचना भोग और अपवर्ग के लिये है। इसी के निमित्त जीवात्मा बार–बार देह धारण करता है क्योंकि कर्मफल भोग उसके बिना संभव नहीं।

'न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद्वेद यदद्भुतम्।

अन्यस्य चित्तमभिसंचेरेण्यमुताधीतं विनश्यति।। (ऋ. 1.10.1)

जो जीव होकर न उत्पन्न होता है और न नष्ट होता है तथा जो नित्य, आश्चर्य युक्त गुण–कर्म–स्वभाव वाला, अनादि और चेतन है, उसको जानने वाला भी कोई आश्चर्य योग (विरला) ही होता है।

उदुष्य देवः सविता सवाय शश्वत्तमं तदपावह्निरस्थात्।

नूनं देवेभ्यो विहिधाति रत्नमथाभजदवीति होत्रंस्वस्तौ।। (ऋ.2.38.1)

हे मनुष्यों जो अनादि, तीन गुणों से युक्त प्रकृति रूपी जगत् का उपादान कारण है, उस (ईश्वर) से सब जीव अपने शरीर और कर्म फल को प्राप्त होते हैं। यदि ईश्वर उत्पन्न न करे तो कोई भी जीव शरीर आदि प्राप्त न कर सकें।

सृष्टि के आदि में विभिन्न योनियों में प्राणियों की उत्पत्ति ईश्वरीय व्यवस्थानुसार संचालित होती है, इसे अमैथुनी सृष्टि कहते हैं। अर्थात् नर–नारी के संयोग के बिना ही जीव शरीर धारण करते हैं। ईश्वरीय व्यवस्थानुसार रज–वीर्य जैसे मूल तत्वों अर्थात् जीवनदायक रासायनिक उपादानों तथा सूर्य के प्रकाश से भूमि के किसी विशिष्ट आवरण में इकट्ठा होने पर आत्मा के संयोग से शरीर की रचना आरम्भ हो जाती है। पश्चात् उस भ्रूण में देह परिपक्व हो जाने पर आवरण फट जाते हैं और बने बनाये शरीर बााहर आ जाते हैं। यह ऐश्वरी सृष्टि कहाती है।

तत्पश्चात् सजातीय प्रजनन क्रम चालू हो जाता है और सांचे में ढल–ढल कर नित्य नये शरीर बनने लगते हैं। परमेश्वर ने प्राणियों के शरीर में विद्यमान् जीवात्मा कोन हीं बनाया अपितु उनके देह को बनाया है। वेद भी कहता है–

को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति।

भूम्या असुरसृगात्मा क्वस्वित्को विद्वांसमुपगात्प्रष्टुमेतत्। ऋ. 1.164.4.

जब सृष्टि के पहले ईश्वर ने सबके शरीर (के डिजाइन) बनाये तब कोई जीव इनको देखनेवाला न हुआं। जब उनमें जीवात्मा प्रवेश किये तब प्राण आदि वायु, रुधिर आदि धातु और जीव भी मिलकर

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

आध्यात्मिक क्रांति से ही मानव जाति का कल्याण

● चतुर्भुज प्रसाद आर्य

परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि दो प्रकार की है। भौतिक और आध्यात्मिक।भौतिक सृष्टि को परमात्मा प्रकृति के सूक्ष्म तत्त्वों से बनाता है। प्रकृति का सबसे सूक्ष्म भाग परमाणु होता है, जो सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण तीन गुणों के मेल से बनता है। 120 परमाणुके योग से हवा, 360 परमाणुओं के योग से अग्नि, 480 परमाणुओं के योग से पानी ओर 600 से 720 परमाणुओं के योग से मिट्टी बनी है। प्रकृति का असली स्वरूप प्रलयकाल में होता है; जब सभी चीजों के अणु–परमाणुओं का वियोग रहता है तथा उन्हीं परमाणुओं के योग से जब हवा, अग्नि, पानी और मिट्टी बन जाते है, तब यह प्रकृति का विकार हो जाता है। जैसे चीनी एक वस्तु है। इससे जब बतासा, पेड़ा, लड्डू , बर्फी बन जाते हैं तब इसे हम चीनी न कहकर अलग–अलग नामों से संबोधित करते हैं। पवित्र वेद के छः उपांगों में सांख्य, योग और वेदान्त में ऋषियों ने जहाँ इसे प्रकृति कहा; है वहीं वैशेषिक, न्याय और मीमांसा में इसे परमाणु कहा है।

पवित्र वेद के छः अंग हैं। इनमें निरुक्त शास्त्र के एक सूत्र में हैं, ''तास्त्रिविधा ऋचः परोक्षकृताःप्रत्यक्षकृता आध्यात्मिकयश्च''। पवित्र वेद तीन प्रकार के अर्थों का वाचक है; परोक्ष, प्रत्यक्ष और आध्यात्मिक। अध्यात्म शब्द का अर्थ जीवात्मा और परमात्मा होता है।

जीवात्मा के लक्षण का वर्णन न्यायदर्शन और वैशेषिक दर्शन में है। न्याय दर्शन में जीवात्मा का प्रथम लक्षण इच्छा होता है। जिस शरीर के अन्दर जीव होता है, उसको ही इच्छा होती है। दूसरों के विद्या; धन आदि को देखकर मनुष्य को द्वेष होता है;जो दूसरा लक्षण है।जीविकोपार्जन के लिए प्रयत्न करना जीवात्मा का तीसरा लक्षण है। जीवात्मा का चौथा और पाँचवाँ लक्षण सुख और दुःख है। अच्छी बातों से सुख और बुरी बातों से दुःख का होना जीवात्मा का लक्षण है। छठा लक्षण ज्ञान का घटना–बढ़ना है। जीवात्मा रूपी मनुष्य का ज्ञान हमेशा घटता–बढ़ता रहता है। एक जैसा नहीं रहता। वैशेषिक दर्शन में; उपर्युक्त कथित जीवात्मा के लक्षणों के अलावा भी कुछ लक्षणों का वर्णन है। जैसे भीतर से जो हवा निकालता है; उसके प्राण और प्रश्वास दोनों नाम हैं। बाहर से जो हवा लेते हैं, उसके भी अपान और श्वास दोनों नाम हैं। जीवात्मायुक्त शरीर वाले ही हम लोग श्वास लेते हैं, और प्रश्वास को छोड़ते हैं। इसका प्रमाण पवित्र वेद और उपनिषदों में अनेकों जगह है। जीवात्मा के होने से ही मन मनन करता है; संकल्प–विकल्प करता है। जीवात्मा के होने से ही हम चलते–फिरते हैं। जीवात्मा के होने से हम इन्द्रियों से कार्य करते हैं। जीवात्मा के होने से ही हमें अन्तर्विकार का होना यानि सर्दी–गर्मी, ज्वर–बुखार, भूख–प्यास लगती है। जीवात्मा के आकार–प्रकार यानि परिमाण का भी वर्णन श्वेताश्वर उपनिषद् अध्याय 5 के सूत्र संख्या 9 में है। बाल के अग्रभाग के सौवें हिस्से के एक हिस्से के पुनः सौवें हिस्से के बराबर जीवात्मा का स्वरूप यानि परिमाण है। इसे दूसरे प्रकार से ऐसा भी समझें की बाल के अग्रभाग के दस हजार के एक हिस्से के बराबर जीवात्मा का आकार है।

परमात्मा, प्रकृति और जीवात्मा से बिल्कुल भिन्न सत्ता है। परमात्मा निराकार, सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वविद्यायुक्त, एक रस और अखंडित है। परमात्मा जन्म मरण से रहित तीनों कालों में हमेशा एक जैसे बने रहते हैं। पवित्र वेद और उपनिषदों में परमात्मा का इसी प्रकार का वर्णन है। परमात्मा को कोई इच्छा नहीं होती। क्योंकि इच्छा सर्वदा के लिए होती है। परमात्मा को सब कुछ प्राप्त होने से उन्हें कोई इच्छा नहीं होती। परन्तु परमात्मा अप्राप्त को ईक्षणशक्ति यानि दर्शन, विचार और कामना होती है; जिससे सृष्टि की रचना और सृष्टि का विनाश विहित समय के अनुसार करते हैं। जहाँ प्रकृति उपादान कारण है, जिससे निमित्तकारण परमात्मा इस सृष्टि को बनाए हैं, वहीं इस सृष्टि को परमात्मा हम जीवों के लिए बनाए हैं। हम लोग अपने अच्छे बुरे कर्मों के अनुसार परमात्मा की न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत अच्छे बुरे फलों को परतंत्र होकर भोगते हैं।

प्रकृति, जीव और ईश्वर; इन तीनों सत्ता अनादि और अनन्त हैं। इनका न कभी जन्म होता है और न कभी नाश होता है। यह सत्ता कब से है और कब तक रहेगी? इसका उत्तर पवित्र वेद और ऋषिकृत ग्रन्थों में कहीं नहीं है, और पूर्व सृष्टि में भी यह प्रश्न अनुत्तरित था। भविष्य में भी जब कभी सृष्टि बनेगी उस समय भी यह प्रश्न अनुत्तरित ही रहेगा। प्रकृति जड़ है ओर जीव एवं ईश्वर ही चेतन हैं। प्रकृति जड़ होने से ईश्वर की प्राप्ति में बाधक है और जीव तथा ईश्वर दोनों चेतन होने से ही दोनों का आपस में मेल होता है।

जिस प्रकार आँख का विषय रूप है और कान का विषय शब्द है। मैं दुनिया के लोगों से पूछूँ कि आँख से आप सुनते क्यों नहीं हैं और कान से देखते क्यों नहीं हैं? तो इसका उत्तर दुनिया के लोग क्या देंगे? असलियत यह है कि परमात्मा जब–जब सृष्टि की रचना करते हैं; उसी समय सभी वस्तुओं का गुण, कर्म, स्वभाव, चरित्र धर्म आदि नियत कर देते हैं। जिस प्रकार आँख का विषय रूप है और कान का विषय शब्द है; उसी प्रकार जीवात्मा का विषय परमात्मा है। हम प्रत्यक्ष रूप से हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी, पारसी वगैरह सब को मरते देखते हैं। इन लोगों का शरीर जो प्रकृति से परमात्मा ने बनाया है; वह तो यहीं रह जाता है और जीवात्मा के निकल जाने से हम मर जाते हैं।

परमात्मा जीवात्मा के अन्दर और बाहर सराबोर है; जो जीवात्मा हमारे हृदय देश में है। पवित्र यजुर्वेद भी इसका प्रमाण है कि **''वेनस्तत्पश्यननिहितं गुहासत्''** योगी उस ब्रह्म को अपने हृदयदेश में खोजते हैं। कैसे खोजते हैं इसका भी प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 32 के मंत्र संख्या–11 में आया है कि **''आत्मनाऽत्मानमभिसंविवेशः''**योगी अपने जीवात्मा के द्वारा उस ब्रह्मको प्राप्त करते हैं; ब्रह्म में प्रवेश करते हैं। महर्षि पतंजलिजी के योगदर्शन के द्वितीय साधन पाद के सूत्र संख्या 51 में चतुर्थ प्राणायाम का वर्णन है। इस चतुर्थ प्राणायाम की उत्पत्ति उपर्युक्त पवित्र वेदमंत्र से हुई है। यज्ञ में जिस प्रकार हवन सामग्री को हवन कुण्ड में डालते हैं उसी प्रकार जीवात्मा रूपी सामग्री का परमात्मारूपी हवन कुण्ड में हवन करना ही चतुर्थ प्राणायाम की व्यावहारिक विधि है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिष्य स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती द्वारा लिखी हुई ध्यान–योग प्रकाश में स्पष्ट है कि साधक या योगी को जैसे ही चतुर्थ प्राणायाम सिद्ध होता है; वैसे ही जीवात्मा का दर्शन होता है और जैसे ही जीवात्मा का दर्शन होता है; वैसे ही परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है।

आज दुनिया के अन्दर जो भी उथल–पुथल,शोषण–दोहन,भ्रष्टाचार, व्यभिचार, और दुराचार और समस्याएँ हैं; उसका एकमात्र कारण हम अपने शरीर को ही सब कुछ समझते हैं। यह शरीर जिसे परमात्मा ने प्रकृति के पदार्थों से बनाया है; उसके भरण–पोषण के लिए हम झूठ, फरेब, ठगी आदि के द्वारा धन कमाते हैं और इसका पोषण 60 वर्ष से लेकर अधिक से अधिक 100 वर्षों तक करते हैं। परन्तु हम जो हैं यानि जीव हैं इसका ख्याल जीवन–पर्यन्त हम नहीं करते। इस अविनाशी जीवात्मा को जानने के लिए सत्याचरण, अहिंसा का पालन, शुभ कर्मों को हम नहीं करते। प्राचीन ऋषियों ने शास्त्रों में स्पष्ट किया हैं कि **''अहम् आत्मा न शरीरम् अहम् इन्द्रो न इन्द्रियम्।''** यहाँ आत्मा शब्द का अर्थ जीव है। मैं जीव हूँ; यह प्रत्यक्ष दीखता शरीर नहीं हूँ। इन्द्र का अर्थ भी जीव है। मैं जीव हूँ; यह प्रत्यक्ष दीखता इन्द्रिय यानि हाथ, पैर, मुँह, कान और आँख नहीं हूँ। महर्षि मनुजी महराज ने भी मानव जाति के लिए स्पष्ट व्यवस्था की है। जब इस शरीर से जीव निकलता है तो धन भूमि पर रह जाता है; पशु गौशाला में ही रह जाते हैं; पति के मृत्यु की बाद पत्नी घर के चौखट तक साथ देती है; सगे–संबंधी और कुटुम्ब के लोग श्मशान घाट तक साथ देते हैं; जिस शरीर का भरण–पोषण जीवन पर्यन्त हम करते हैं वह चिता तक साथी रहता है और जो भी हम धर्म–कर्म करते हैं; वही जीवात्मा का एकमात्र साथी होता है।

मानवजाति की वर्तमान समस्याओं का निदान न सामाजिक क्रांति से संभव है, न सांस्कृतिक क्रांति से संभव है, न वैचारिक क्रांति संभव है न साम्यवाद से संभव है और न सम्पूर्ण क्रांति से ही संभव है; अपितु मानव जाति के कल्याण के लिए मौजूदा सभी क्रांतियाँ; सभी उपाय और सभी व्यवस्थाएँ असफल सिद्ध चुकी हैं।

भौतिक सृष्टि और आध्यात्मिक सृष्टि में समन्वय द्वारा ही योगेश्वर श्रीकृष्ण और मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम मानव समाज में संतुलन लाए थे। इसलिए मानव जाति के कल्याण का एक मात्र निदान आध्यात्मिक क्रांति (जीवात्मा और परमात्मा) से ही है।

आर्य सदन, मवेशी अस्पताल रोड,
मोतिहारी,जिला–पूर्वी चम्पारण
(बिहार) 845401

www.thearyasamaj.org

भारतीय स्वातंत्र्य यज्ञ की अमर आहुति–बहिन सत्यवती

● डॉ. रेखा चौहान

स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से सभी देशवासी परिचित हैं। वे ऋषि दयानन्द के प्रमुख उत्तराधिकारी थे। स्वामी जी ने वैदिक धर्म प्रचार के लिए जो महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं उनसे समस्त भारतीय अवगत हैं। उन्हीं की बड़ी पुत्री श्रीमती वेद कुमारी की सुपुत्री सत्यवती का जन्म सन् 1906 में हुआ। सत्यवती के ऊपर अपने नाना स्वामी श्रद्धानन्द जी का बहुत प्रभाव था। समाज–सुधार तथा राष्ट्रप्रेम की भावना इन्हें परम्परा से ही प्राप्त थी।

जब सत्यवती दस बारह वर्ष की थीं, तब देश में तेजी से स्वतंत्रता की बयार बह रही थी। लाल, पाल, बाल का बोलबाला था। जलियाँवाले बाग और रौल्ट एक्ट की रोंगटे खड़ी करने वाली घटनाओं ने इनके कोमल हृदय पर गहरा प्रभाव डाला। 1920–21 में जब कांग्रेस का नेतृत्व गांधी जी के हाथों में आया तो उन्होंने सत्याग्रह असहयोग आन्दोलन प्रारंभ कर दिया। सत्यवती जी ने तभी कांग्रेस के कार्यक्रमों में भाग लेना शुरु कर दिया। गाँव–गाँव में टोलियाँ बनाकर स्वराज्य की आवाज बुलन्द कर विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का जोखिम भरा कार्य भी इन्होंने किया। लाहौर (जालन्धर) आदि स्थानों पर कांग्रेस के कार्यक्रमों में ये मंच से भी बोलने लगीं। दिल्ली में इनके मामा श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति ने इन्हें वहाँ आकर कार्य करने की सलाह दी। अब तो ये खुलकर राजनीति में भाग लेने लगीं। दिल्ली की जनता ने भी मुक्त हृदय से उनका स्वागत किया।

सन् 1928 में जब साइमन कमीशन भारत में आया तो सारे देश में उसका जोरदार विरोध हुआ। लाहौर में तो लाला लाजपत राय इस विरोध का नेतृत्व करते हुए पुलिस की बर्बरता के शिकार हुए, उसी से उनका निधन हो गया। यही कमीशन जब दिल्ली पहुँचा तो वहाँ भी उसे काले झण्डे दिखाए गए, विरोध मे जबर्दस्त प्रदर्शन हुए। 'साइमन गो बैक' के नारे लगाए गए। इन प्रदर्शनों में बहिन सत्यवती जी ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। दिल्ली पुलिस ने सत्यवती जी को सरकार विरोधी प्रमुख लीडरों में मानते हुए उन पर निगरानी कड़ी कर दी।

1930 में डांडी मार्च से सम्बंधित नमक सत्याग्रह के सिलसिले में जब गांधी जी को बन्दी बनाया गया तो देशभर में हड़ताल और प्रदर्शन हुए। दिल्ली में इस विशाल आन्दोलन का नेतृत्व करने वाले नेताओं में सत्यवती जी का नाम प्रथम पंक्ति में था। उस समय दिल्ली में दो नव युवतियों का नाम बच्चे–बच्चे की जुबान पर था, बहिन सत्यवती तथा अरूणा आसफअली। सुधी पाठकों को अवश्य ध्यान होगा कि 1920–21 के असहयोग आन्दोलन के समय भी दिल्ली में एक जोरदार नारा उभरा था–'यह श्रद्धानन्द की दिल्ली है, यह अजमल खाँ की दिल्ली है।' यह उल्लेखनीय है कि इन दोनों ही नवयुवतियों की आयु समय मात्र 21 से 24 वर्ष के बीच थी। परंतु क्रांति की ज्वाला के दीवानों की न तो आयु उस देखी जाती न जात पाँत और न लिंग भेद। प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस की आयु भी तो मात्र 15–16 वर्ष की ही थी। क्या देश कुर्बानी को कभी भूल सकता है? अस्तु.....

दिल्ली में जिला अदालत और पुलिस कोतवाली पर एकत्रित भारी जन–समुदाय को जब पुलिस ने आगे बढ़ने से रोका तो अथाह जन सागर में सैलाब आ गया। तब पुलिस ने न केवल अन्धाधुन्ध लाठी चार्ज ही किया, बल्कि गोलियाँ भी दागीं। काफी लोग हताहत हुए। यह लगभग वही स्थान था जहाँ 1921 के आन्दोलन में वीर श्रद्धानन्द ने बन्दूकों के सामने सीना तान दिया था। आज वहीं उनकी (नातिन धेवती) इस विशाल उत्तेजित भीड़ का नेतृत्व कर रही थी, उसी निर्भयता के साथ।

जब भीड़ बेकाबू होने लगी तो सत्यवती जी ने एक ऊँचे स्थान पर खड़े होकर जोश भरे स्वर में जनता को सम्बोधित करते हुए कहा–'सत्याग्रही सज्जनो और प्यारी बहिनो', इन घटनाओं से डरने या घबराने की जरूरत नहीं है, बल्कि साहस के साथ संगठित होकर मुकाबला करने की आवश्यकता है। मेरा आप से निवेदन है कि आप जोश में भी होश बनाये रखें। आपका यह त्याग आजादी के द्वार पर दस्तक दे रहा है।' सत्यवती जी अपनी वक्तृता पूरी भी न कर पाई थीं कि उन्हें कई नेताओं सहित बन्दी बना लिया गया। इस समय पुलिस सत्यवती जी के साथ बहुत सख्ती से पेश आई–क्योंकि सत्यवती जी के कार्यों से जनता में शासन के विरूद्ध भारी आक्रोश पैदा हो रहा था। उन्हें धमकी भरे लहजे में कहा गया कि आप कम से कम छः महीने के लिए राजनीति से बिल्कुल अलग रहें और अपने सद्व्यवहार का प्रमाण पत्र भी लिखित रूप में दें। साथ ही उनसे पाँच हजार रुपये जमानत देने को भी कहा गया। परंतु सत्यवती जी ने सभी शर्तों को ठुकरा दिया और कहा कि हम तो देश के लिए प्राण हथेली पर लिए घूमते हैं आप जो चाहें करें।

पुलिस सत्यवती जी के इस दो टूक जवाब को सुनकर आग बबूला हो उठी। इन लोगों को लेकर पुलिस स्टेशन की तरफ चली ही थी–कि भीड़ से कई स्वर उठे–बहिन जी, हमारे लिए क्या आदेश है? सत्यवती जी ने वहाँ एकत्र भीड़ को विशेष रूप से महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा–'प्यारी बहिनो, आप पुलिसिया धमकियों और विदेशी सरकार के दमनकारी कारनामों से विचलित नही हों, यदि प्राण देकर भी आजादी की कीमत चुकानी पड़े तो पीछे न हटें, क्योंकि आजादी के सामने प्राणों का कुछ मूल्य नहीं होता।' इस प्रदर्शन में नव युवक भी भारी संख्या में सम्मिलित थे, उनकी ओर संकेत करते हुए अपनी ओजस्वी वाणी से उन्होंने कवि की चार पंक्तियाँ प्रस्तुत करते कहा–'प्यारे बन्धुओ अब भाषण बाजी का समय नहीं है आपसे तो मुझे इतना ही कहना है–'

'नौ (नौजवानो)! वक्त है मिट जाओ कौमी आन पर।
देखना बट्टा न लग जाए वतन की शान पर।।
मेरे प्यारे बन्धुओ! प्यारा वतन खतरे में है।
नौजवानो सोचना क्या? खेल जाओ जान पर।।'

इतना सुनते ही भारत माता की जय, म. गांधी की जय तथा वन्देमातरम् के गगन भेदी नारों से आकाश गूँज उठा। अब तो पुलिस के धैर्य का भी बाँध टूट रहा था। 'बहुत को चुका–अब जल्दी चलो–वर्ना........?' पुलिस ने धमकी दी। पर अब सत्यवती जी पुलिस की सख्ती और धमकियों से तनिक भी भयभीत नहीं होतीं थीं। क्योंकि इससे पहले वे कई बार धरनों, जलूसों तथा प्रदर्शनों में सम्मिलित होकर पुलिस का समाना कर चुकी थीं। लाठियों के वार झेल चुकी थीं और जेल भी जा चुकीं थी। पुलिस तत्काल इन्हें गिरफ्तार कर ले गई और केस चलाकर छः मास के कठोर कारावास का दण्ड दे दिया गया।

सत्यवती जी तो पुलिस और गुप्तचर विभागों के इन रोज–रोज के कारनामों की आदी बन चुकी थीं। जेल की यातनाओं, अव्यवस्थित खान–पान तथा यहाँ से वहाँ स्थानातंरण के कारण इनका स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता चला गया। परंतु ये तो स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए स्वयं को समर्पित कर चुकी थीं। जेल की अवधि पूरी करके आईं ही थीं कि 1940–41 में इनकी सरकार विरोधी गतिविधियों के कारण इन्हें फिर बन्दी बना लिया। चार छः महीनो के लिए जेल में बन्द करने के लिए सबूत जुटाना पुलिस के लिए कोई मुश्किल काम नहीं था। भाड़े के गवाह हर जगह हर समय तैयार रहते थे।

सत्यवती जी जेल से छूट कर जब आईं तो द्वितीय महासमर शुरु हो चुका था। म. गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम चरण की तैयारी में जुटे थे। इसी के परिणाम स्वरूप 9 अगस्त 1942 को 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' और 'करो या मरो' के आन्दोलन की पुकार हुई। देश के अधिकांश नेता बन्दी बना लिए गए, कुछ भूमिगत हो गए। ऐसी स्थिति में सत्यवती जी भला कैसे बाहर रहतीं? उन्हें भी जेल में बंद कर दिया गया। सर्वथा अशक्त तथा शारीरिक दृष्टि से अत्यंत दुर्बल होने पर भी उन्होंने जेल से रिहा होने से इंकार कर दिया। घर पर रहकर विश्राम की सलाह को उन्होंने ठुकरा दिया। मन ही मन उन्हें यह भावना कचोटती थी कि यदि वे घर बैठ गईं तो वे अनेक महिलाएँ जो उन्हीं की प्रेरणा से स्वतंत्रता संग्राम की पथिक बनी थीं कहीं निराश या हताश न हो जायँ। उन्हें यह भी आशंका थी कि उचित नेतृत्व के अभाव में कहीं उनका बनोबल टूट न जाए। परंतु जेल में अपथ्य और अनियमित दिनचर्या के कारण वे अब अस्थि पिंजर मात्र ही दिखाई दे रहीं थीं। अतः डॉक्टरों की सलाह और उच्चाधिकारियों के जोर देने पर उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया।

1945 में इनकी हालत अत्यंत नाजुक होने पर इन्हें अस्पताल में चिकित्सा के लिए दाखिल कराया गया।.... परंतु वहाँ दो दिन के पश्चात् ही केवल 39 वर्ष की अल्पायु में ही इस जुझारू स्वतंत्रता सेनानी, आर्य ललना का स्वर्गवास हो गया और रह गई उनके बलिदान की पावन स्मृति।

सच तो यह है कि स्वाधीनता–आंदोलन में अल्पायु से ही भाग लेने के कारण, रात दिन की दौड़–धूप के कारण, भूख प्यास की निरन्तर उपेक्षा के कारण, बार–बार कारावास की मिट्टी की मिलावट की रोटी और कंकड़ वाली पनीली दाल के प्रयोग के कारण और पुलिस की दमनकारी नीति के कारण ये जीवन के प्रारंभिक दिनों में ही स्वास्थ्य को खो बैठीं थीं। व्यस्तता के कारण न तो इन्हें विश्राम का समय था और न स्वास्थ्य सुधार की ओर इनका ध्यान था। इनका तो एक ही लक्ष्य था–''भारत की आजादी।''

इतना होने पर भी उनका जीवन चहुँमुखी प्रतिभा का परिचायक था।

शेष पृष्ठ 11 पर

www.thearyasamaj.org

राष्ट्रीय रंगमंच पर आत्मघाती मानव त्रासदी की वापसी!

● हरिकृष्ण निगम

कोकराझार, दुबरी, बोंगईगाँव व चिराग की व्यापक हिंसा के पीछे कड़वा सच

असम के कोकराझार में जुलाई 2012 में हुए भारतीय जातीय–साम्प्रदायिक दंगों में जब लगभग 100 व्यक्तियों की नृशंसता से हत्या कर दी गई थी और लगभग साढ़े–चार लाख लोग बेघर–बार हो गए थे उसका मूल कारण एक ऐसी आत्मघाती त्रासदी थी, जो हम भली भाँति जानते थे पर हतप्रत भी थे। ऐसा क्यों हुआ? क्या इसका मूल कारण असम व दूसरे लगे राज्यों का जनसांख्यिक बदलाव और धार्मिक अनुपात था? कोकराझार, दुबरी, बक्सा, बोंगईगाँव, व चिराग के व्यापक दंगों के बाद मुम्बई, बेंगलुरू, चेन्नई, हैदराबाद आदि नगरों में जिस प्रकार दंगे हुए और उत्तरपूर्व के राज्यों के नागरिकों–विद्यार्थियों को डराकर भगाया गया। वह एक गहरी साजिश का रिहर्सल था।

इस मानव त्रासदी और नर संहार को पहले ही टाला जा सकता था यदि केन्द्र व असम व कुछ उत्तरपूर्व राज्यों की सरकारों के राजनीतिक मनोबल के अभाव के कारण उपर्युक्त जिलों के दस हजार वर्ग किलोमीटर की अपनी भूमि घुसपैठ के कारण मूल निवासियों के लिए ही खतरनाक नहीं बन जाती।

यह एक कड़वा सच है कि पूर्वी बंगाल, अब बांग्लादेश, एक शताब्दी से आसाम पर अपनी नजर गड़ाए है। विभाजन के बाद भी असम में उठती हिसां व घुसपैठ पर हम सदैव शुतुरमुर्गी रूख अपनाते रहे और समय– समय पर सुविधा और सन्तुलन की केन्द्र की राजनीति के कारण ''माइग्रेट मुस्लिम'', घुसपैठिए मुस्लिम' या अवैध रूप से सैकड़ों छिद्रों वाले सीमावर्ती क्षेत्रों में या असम को मुख्य भूमि से जोड़ने वाले सिलीगुड़ी कारीडोर को असुरक्षित बनने पर भी हम अपनी आँखे बन्द करते रहे हैं। अवैध रूप से रहने वाले बांग्लादेशी व मुस्लिम सैकड़ों, हजारों में नहीं, लाखों में बसते रहे हैं। उन सबको राजनीतिक संरक्षण प्राप्त होता रहा है।

कांग्रेस ने तो प्रारम्भ से ही चाहे असम हो या मुम्बई, दिल्ली ही था पुणे अथवा कोलकाता, अवैध बांग्लादेशियों की उपस्थिति को नकारा है। जो आज उनके अल्पसंख्यक वोट बैंक के समन्वित हिस्सा बन चुका है। क्या दुनियां के किसी भी सभ्य देश में किसी भी सरकार ने जानबूझ कर एक व्यक्ति को एक दिन भी अवैध रूप से अपने यहाँ ठहरने दिया है। यह सिर्फ भारत ही है जहाँ यह सम्भव है। फिर आँतरिक सुरक्षा की चिन्ता या उससे जूझने की बात भी करना एक बचकानापन है। इस जातीय और धार्मिक टकराव में कोई बाहरी हाथ नहीं था। मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने खुलकर केन्द्र पर आरोप लगाया था कि सुरक्षा बलों को भिजवाने के कारण जनपलायन व हत्याकाण्ड चलता रहा था। स्वयं बोडोलैण्ड टेरीटोरियल काउन्सिल के प्रमुख हगरामा मोहिलारी ने स्पष्ट कहा था कि दुबरी जिले के मूलनिवासियों अवैध रूप से रहने वाले बांग्लादेशियों ने झगड़े शुरू किए थे। दुबरी बांग्लादेश से लगी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर है और जो 2011 की जनगणना में पिछले दशक की 16.93 प्रतिशत की अपेक्षा इस दशक में 24.4 प्रतिशत बढ़ी जनसंख्या से जूझ रहा है। भारत का यह सीमावर्ती स्थान और अनेक स्थल मुस्लिम–बहुल बन चुके हैं। वे खुलकर कहते हैं कि उन्हें भारत से कुछ लेना देना नहीं है, सिवाय देश के संवैधानिक संरक्षणों की ही वे हर मुद्दे पर दुहाई देते पाए जाते हैं। बोडो–मुस्लिम से संघर्ष 1952 में भी हुए थे, 1994 में भी और फिलहाल ये 2012 में हुए हैं पर बोडों जनता की हृदयस्थली कोकराझार के लिए आज भी सरकार की कोई स्पष्ट रणनीति नहीं रही है।

अवैध मुस्लिम घुसपैठियों का भारत की सीमा में रहकर समय समय पर व्यापक अशान्ति फैलाने के परिणाम देखे जा चुके हैं। इस तरह के योजनाबद्ध नरसंहार का भड़कना कांग्रेस के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई के शासनकाल में हुआ पर हमारे देश के अंग्रेजी मीडिया या कथित सेकुलरवादी नेताओं का रूख उसके विरूद्ध कभी भी आक्रामक नहीं रहा यदि वह भाजपा–शासित राज्य होता तो सारी दुनिया में उन्होंने हाहाकार मचा दिया होता। यद्यपि मुसलमानों को वहाँ निशाना बनाया जा रहा था पर उनमें आक्रामकता नदारद है। क्योंकि वह कांग्रेस शासित राज्य था। यद्यपि तरुण गोगोई ने पहले स्वयं केन्द्र पर आरोप उठाया कि वह निष्क्रिय थी। उसने सैन्य बलों को वहाँ नहीं भेजा। पर फिर कांग्रेस हाईकमानड की एक घुड़की ने उसका मुँह बन्दकर दिया। 'आल असम स्टूडेन्ट्स यूनियन' (ए.ए.एस.यू.) काफी दिनों से अवैध बांग्लादेशियों के विरूद्ध सरकार को सचेत करता रहा है पर सभी जगह मौन साधा गया है।

इस मूलभूत प्रश्न को किस तरह के राजनीतिक स्वांग के द्वारा पर्दे के पीछे रखा जाता है इसका एक उदाहरण हाल में केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सी.बी.आई.) के मई 26, 2013 के एक प्रकरण से पता चल सकता है। पूरे एक साल बाद सी.बी.आई ने कोकराझार, दुबई और चिरांग जिलों में हुई वीभत्स हिंसक घटनाओं के बाद उन 37 लोगों के विरूद्ध अभियोग पत्र दिया है जिन्होंने जुलाई 2012 को कोकराझार के जॉयपुर क्षेत्र में चार युवकों की हत्या कर दी थी। जिसके कारण ऐसा रक्तपात हुआ था जिसमें 100 लोग मारे गए थे और 4.5 लाख व्यक्ति बेघरवार हुए थे। 37 दंगाईयों को आरोपी बनाए जाने के बाद भी 12 अन्य आतंकवादी अभी भी भगोड़े घोषित किए गए हैं।

आल बी.टी.सी. माइनारिटी स्टूडेन्ट यूनियन के पूर्व अध्यक्ष मोइनुन हक और उसके भाई मोदीबुल इस्लाम उर्फ रतूल जो पहले भी हत्या के एक प्रकरण में गिरफ्तार पूर्व पुलिसकर्मी या उसे भी जुलाई 29, 2012 की एक साजिश में लिप्त पाया गया था। जहाँ मोइनुल हक पहले ही गिरफ्तार हो चुका है, रतूल अभी भी फरार है।

जिन लोगों को इन हत्याओं के प्रकरण में आरोप पत्र मिल चुका है उसमें अशराफुल मण्डल, मोइनुद्दीन अली शेख, अब्दुल रहीम मण्डल, अरतीफुल रहमान शेख उर्फ केकड़ा, आलम शेख आदि सभी जॉयपुर के कुख्यात अपराधी हैं।

केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने हिंसा की घटनाओं की जाँच के लिए एक 15 सदस्यी टीम नियुक्त की थी। जिसमें कार्यालय बोंगईगाँव रिफाइनरी एण्ड पेट्रोकेमिकल्स लि. के चिरांग जिले के आलीगाँव परिसर चुना गया था। असम पुलिस द्वारा जाँच किए जाने वाले हिंसा के अन्य प्रकरण अगस्त 2010 के ही थे। श्रोतों के अनुसार जाँच ब्यूरो का लक्ष्य इन दंगो के सरगनाओं की पहचान करना भी था और यह भी पता लगाना था कि उसमें कहीं बाहर के तत्त्व तो शामिल नहीं है।

गत वर्ष दिसम्बर में अभूतपूर्व शिथिलता व देरी के साथ जब बोंगईगाँव अदालत में आरोपियों के विरुद्ध अभियोग पत्र जारी किया गया उसकी अन्तिम टिप्पणी अत्यंत महत्त्वपूर्ण थी – हिंसक प्रकरणों की श्रृंखला से यह अनुमान लगता है कि वे दोषी आक्रांता अप्रवासी मुस्लिम थे और बोडो नहीं। वस्तुतः यह बंग्लादेशियों का एक सुनियोजित हमला बोडो जनजातियों के विरुद्ध था। जिससे वे उन पर इस्लामी वर्चस्व स्थापित कर सकें।''

इस हिंसा ने बी.टी.सी. प्रशासन और राज्य सरकार की राजनीतिक अस्थिरता को भी उजागर करते हुए बी. पी. एफ. के स्थानीय नेता प्रदीप कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया। जैसा हर बार होता आया है जमायते उलेमा हिन्द की असम इकाई ने केन्द्रीय जाँच ब्यूरो द्वारा 8 लोगों को आरोपपत्र देते ही जिसमें बोडो युवकों की हत्या का व बोडों की नस्ली नरसंहार का अभियोग लगाया गया है खुलकर धमकी और चुनौती दे डाली। जमायत के राज्य सचिव हाफिज बशीर अहमद ने उल्टे गुजरात उच्च न्यायालय में अपने कानूनी प्रकोष्ठ की ओर से सी.बी.आई. की जाँच प्रक्रिया के विरुद्ध मुकदमा भी दायर कर दिया।

आतंकवादियों व उनके मीडिया में समर्थकों की यह पुरानी परखी हुई रणनीति रही है कि किसी भी प्रकरण को लम्बा खींचकर अपने नरसंहार के आरोप से ध्यान बटाया जाए। आल इण्डिया यूनाइटेड डेमोक्रेटीक फ्रन्ट (ए. आई. यू. डी. एफ.) अहमद ने सी. बी. आई की चार्जशीट को झुठो का पुलिन्दा कह कर गुवाहटी के अंग्रेजी अखबारों मे भर्त्सना की। सी. बी. आई. ने विशेष न्यायालय के सामने बोंगईगाँव जिले के 8 दंगाइयों के चाहे यह निर्णयात्मक टिप्पणी देर से ही आई हो, राजनीतिक सहानुभूति पैदा की गई। बांग्लादेशी इस्लामी धर्मान्धो की स्थानीय लोगों के साथ मिलकर बोडो जनजातियों के नरसंहार की साजिश के सामने आने पर भी यह प्रकरण शेष भारत में दफनाने की धृणित कोशिश कांग्रेस की तुष्टीकरण की राजनीति का ही हिस्सा है। साढ़े चार लाख बंगाली भाषी और 100 से अधिक गैर मुस्लिम बोडो मार डाले गए जो असम पुलिस द्वारा अभिलेखित किए। पर लज्जा की बात है कि न तो केन्द्रीय सरकार या सेकुलरवादी बुद्धिजीवियों की अन्तरात्मा इस प्रश्न पर कभी विचलित हुई।

असम के कोकराझार और उत्तरपूर्व राज्यों के अनेक स्थानों की पिछले दो वर्षों की मानव त्रासदी, हत्याओं का दौर और पलायन एक अलग शोध का विषय है। लगभग एक शताब्दी से अधिक समय से किस तरह का बंगाल सारे असम पर अपनी नजर गड़ाए था, यह इतिहास का विषय है। सन् 1905 में ही मुस्लिम लीग ने 'बंगे–इस्लाम' की माँग की थी और मुस्लिम–बहुल पूर्वी बंगाल के निवासियों को असम में बसाने की रणनीति शुरू हो गई थी। द्वितीय महायुद्ध के समय असम के मुख्यमंत्री सर मोहम्मद सादुल्ला ने इस देशान्तरण को बढ़ावा दिया तब से यह प्रक्रिया आज भी किसी न किसी रूप में चल रही है।

इस विषय में सेवानिवृत, भूतपूर्व उपसेनाध्यक्ष तथा असम के भूतपूर्व गवर्नर लेफ्टिनेंट–जनरल एस.के. सिन्हा आज एक विशेष माने जाते हैं। उनके 15 अगस्त 2012 के डेक्कन टेरेल्ड' में प्रकाशित एक विशेष पृष्ठभूमि वाले आलेख को पढ़ने की यह लेखक देशवासियों व अध्येताओं को संस्तुति करता है जिससे सत्य को भली–भाँति समझा जा सके।

ए–1002, पंचशील हाईट्स
महावीर नगर, कान्दिवली (प),
मुम्बई–400067
दूरभाष 28606451

www.thearyasamaj.org

जिन्हें हम भूल गए हैं।
देशभक्त लाला हरदयाल

● डॉ. सहदेव वर्मा

(पिछले अंक से आगे)

इधर भारत में 23 दिस. 1912 को चाँदनी चौक दिल्ली में वाइसराय लार्ड हार्डिंज पर बम फैंका गया, पर वह बच गया। लाला हरदयाल ने इस घटना का वर्णन इन शब्दों में किया– '23 दिस. 1912 के बम तेरा स्वागत है! स्वागत है!! स्वागत है!!! अतुल साहस के अग्रदूत, सुप्त आत्माओं को पुनः जगाने वाले प्रबोधक! तुम ठीक समय पर आए हो। मेरे देशवासियो! इस तूफ़ान का स्वागत करो। सेवा और बलिदान का व्रत लो।' वन्दे मातरम्।

इस बम का विस्फोट करने वाले क्रान्तिकारियों के सम्मान में बर्कले (अमेरिका) में ला. हरदयाल ने एक अत्यन्त जोशीला भाषण दिया जिसमें क्रान्तिकारियों की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई।

गदर पार्टी:– सन् 1913 में सैन्ट जॉन्स में रहने वाले भारतीयों ने अपने देशवासी क्रान्तिकारियों की सहायतार्थ धन एकत्रित करने के उद्देश्य से एक सम्मेलन किया। लाला हरदयाल के नेतृत्व में अपील करने पर भारी मात्रा में धन प्राप्त हुआ। प्रचार के लिए एक पार्टी का गठन तथा समाचार पत्र निकालने का भी निश्चय हुआ। नाम रखा गया 'गदर पार्टी' और पत्र का नाम भी 'गदर'। गदर पत्र में नाम के अनुरूप ही लेख प्रकाशित होने लगे। इससे अमेरिकन सरकार भी कुछ चिन्तित हुई, इसलिये कार्यकर्ताओं ने सुरक्षित स्थान पर एक भवन लेकर उसे प्रचार का केन्द्र बनाया। नाम रखा – 'युगान्तर–आश्रम।' पत्र में अंग्रेजी शासन की खूब बखिया उधेड़ी जाती। पत्र निःशुल्क था– परन्तु पाठक स्वेच्छा से पर्याप्त धन आश्रम में भेज देते थे। गुप्तचर विभाग ने भारत सरकार को इसकी रिपोर्ट भेजी 'गदर' नाम का यह पत्र हिंसा का हिमायती है। इसका मुख्य लक्ष्य अंग्रेजों की हत्या करना, सरकार के विरुद्ध विद्रोह करना और भारत से ब्रिटिश सरकार को हटाना है।' भारत सरकार इस धुआँधार प्रचार से बौखला उठी और लाला हरदयाल को बन्दी बनाने की जुगत में लग गई।

सन् 1914 में प्रथम महायुद्ध छिड़ गया। विश्व दो गुटों में विभाजित हो गया। ब्रिटेन की स्थिति नाजुक होने लगी। जर्मनी उसका प्रबल शत्रु था। अतः भारतीय क्रान्तिकारियों का झुकाव जर्मनी की ओर था। लाला हरदयाल ने गोपनीय रूप से जर्मनी से सम्बन्ध स्थापित कर लिए। युगान्तर आश्रम की एक मीटिंग में भारी संख्या में गदर पार्टी के कार्यकर्ता तो सम्मिलित हुए ही इसमें एक उच्च जर्मन अफसर भी छद्म वेश में थे। तभी विश्वस्त सूत्रों से पता चला कि ब्रिटिश सरकार लाला हरदयाल को दिल्ली बम केस में फँसा कर बन्दी बनाने की ताक में है। लाला जी वहाँ का प्रबन्ध कर बर्लिन जा पहुँचे। वहीं जर्मन सरकार से घनिष्टता बढ़ाई।

अभूतपूर्व योजना– 1915 में जर्मनी के परामर्श से लाला हरदयाल ने एक प्रभावी योजना बनाई। जर्मनी की सहायता से दो युद्ध पोतों का प्रबन्ध कर उनमें कई हजार बन्दूकें तथा भारी मात्रा में कारतूसों के साथ अनेक गुप्त दस्तावेज तथा क्रान्तिकारियों के नाम संदेश पैक करके दोनों जहाज यथासमय भारत के लिए रवाना कर दिए गए। पर्याप्त सतर्कता बरतने पर भी दुर्भाग्यवश जहाज ब्रिटिश सेना की गिरफ्त में आ ही गए। तलाशी में इस सामग्री को देखकर अंग्रेजो के तो होश उड़ गए। गुप्त दस्तावेजों के आधार पर कलकत्ता से कराँची तक अन्धाधुन्ध धर पकड़ हुई। आनन फानन में मुकदमा चलाकर कितनों को फाँसी पर लटकाया, कितनों को काला पानी भेजा और अनेकों को लम्बी–लम्बी सजाएँ देकर जेलों में बन्द कर दिया।

इस असफलता से लाला हरदयाल को गहरा आघात लगा। इस बात की तो केवल कल्पना ही की जा सकती है, कि एक ऐसी महत्त्वपूर्ण योजना के लिए कितने और कैसे प्रयास करने पड़े होंगे। इधर युद्ध का रुख बदलता सा दिखाई दे रहा था। लाला हरदयाल तथा जर्मन अफसरों के बीच खटास पड़ने लगीं। बर्लिन समिति के भारतीय समर्थकों के बीच सन्देह की दीवार खड़ी होने लगी। इस दशा में लाला हरदयाल ने जर्मनी छोड़ने का मन बनाया। किन्तु जर्मनी ने उनके बाहर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इससे लाला जी को बड़ी वेदना, हुई– पर करते भी क्या? इस स्थिति में भी लाला हरदयाल ने अपना सन्तुलन नहीं खोया और कई लेख जर्मनों के पक्ष में लिखे। 1916 से 1919 तक तनाव का यह दौर उनके लिए अत्यन्त कष्टदायी था।

कुछ समय बाद जर्मन सरकार ने उनके सामने स्वीडन जाने का प्रस्ताव रखा, जो उन्होंने तुरन्त मान लिया। स्वीडन जाकर उन्होंने स्वीडिश भाषा सीख ली और वहाँ की शिक्षा संस्थाओं में व्याख्यान देने लगे। किसी भी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना उनके लिए दैवीय वरदान था। जर्मनी में रहते हुए वे जर्मन भाषा में अधिकारपूर्वक बोलने, लिखने तथा पढ़ने का कार्य इस प्रकार करते थे, मानो उनकी मातृभाषा हो। स्वीडिश भाषा सीखने के पीछे भी एक दिलचस्प कहानी है। वहाँ उन्हें एक सार्वजनिक सभा में भाषण देना था। उन्होंने अंग्रेजी में अपना भाषण लिखकर वहीं के एक प्रोफ़ेसर से स्वीडिश भाषा में उसका अनुवाद करवा लिया। प्रो. साहब ने उन्हें वह भाषण स्वीडिश भाषा में पढ़कर सुनाया। केवल सुनने मात्र से लाला जी ने स्वीडिश भाषा का उच्चारण, शैली–हावभाव जान लिए और उसी रूप में सभा में व्याख्यान देकर सबको चकित कर दिया। फिर तो कुछ ही समय में वे साहित्य, दर्शन इतिहास आदि गंभीर विषयों पर भी स्वीडिश भाषा में धारा प्रवाह व्याख्यान देने लगे।

जर्मनी से जाने के बाद लाला हरदयाल ने स्वीडन में नौ वर्ष बिताए। इस में बाह्य जगत से उनका सम्पर्क प्रायः समाप्त सा ही रहा। अब उन्होंने अपनी कार्य शैली में भी परिवर्तन कर लिया। शस्त्रों का सहारा लेना शुरू कर दिया। राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएँ कम करके सामाजिक स्तर पर बल देने लगे। वे कुछ ऐसा महसूस करने लगे थे कि जीवन का आखिर पड़ाव शायद स्वीडन में ही गुजारना होगा। अतः उन्होंने वहीं की नागरिकता लेने का मन बना लिया।

सन् 1927 में ब्रिटेन ने राजनीतिक अपराधियों के लिए 'राज–क्षमा' की घोषणा करते हुए उनका इंगलैण्ड आने जाने पर से प्रतिबन्ध हटा लिया। इस घोषणा से लाला हरदयाल के लंदन जाने का मार्ग प्रशस्त हो गया और वे लन्दन पहुँच गए। वहाँ उन्होंने कुछ संस्थाओं से सम्पर्क किया जहाँ उन्हें व्याख्यान देकर निर्वाह योग्य आमदनी हो जाती थी। वे कई भाषाओं के ज्ञाता थे। अतः दूसरे देशों की संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों में भी उनके व्याख्यानों की माँग बढ़ गई। इससे उनकी आय तथा परिचय दोनों में वृद्धि हुई।

अब लन्दन प्रवास में उनकी दबी हुई शैक्षिक तथा साँस्कृतिक लालसा ने अगड़ाई ली। उनकी रुचि और आस्था बचपन से ही बौद्ध धर्म की ओर थी। अतः उसके विशेष अधययन के द्वारा उन्होंने लोगों को परिचित कराने के निश्चय किया। इस विचार को साकार रूप देने के लिए उन्होंने लन्दन के 'स्कूल ऑफ ओरियन्टल स्टडीज' में अपना नाम 1928 में डॉक्टरेट के लिए रजिस्टर करा लिया और शोध का विषय चुना– 'बौद्ध संस्कृत साहित्य में बोधिसत्त्व सिद्धांत।' इस शोध प्रबन्ध में सामयिक दृष्टि से बौद्धधर्म से सम्बन्धित तथ्यों का गहन विवेचन किया है। शोध प्रबन्ध को देख, सुन तथा पढ़कर अंग्रेज विद्वान उनकी योग्यता विद्वत्ता तथा विवेचना–प्रणाली के समक्ष नतमस्तक हो गए। 1931 में इसी शोध पर उन्हें 'डॉक्टर ऑफ फिलॉस्फी' (PH.D.) की उपाधि प्रदान की गई।

लाला हरदयाल ने 1908–9 में लगभग 23–24 वर्ष की आयु में भारत छोड़ा था उस समय सरस्वती और लक्ष्मी दोनों देवियाँ उनके स्वर्णिम भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए दीपक ले उनकी आरती उतारने के लिए तैयार खड़ी थीं। लेकिन भारत माँ के इस सपूत ने उनकी उपेक्षा कर माँ की परतंत्रता की बेड़ियों को काटने के लिए घर–द्वार छोड़कर क्रान्ति पथ का वरण किया। इन तीस वर्षों में उन्हे न दिन को चैन था न रात को नींद। निरन्तर एक रट थी भारत माँ अजाद हो।

अंतिम लन्दन प्रवास के समय, मातृभूमि की सेवा में जीवन समर्पित करने की उनकी आकाँक्षा अत्यन्त बलवती हो उठी। मातृभूमि की याद में वे चुपचाप एकांत में दो आँसू अवश्य बहा लेते थे। पर उन्होंने अपनी पीड़ा और तड़प को कभी किसी से प्रकट नहीं किया। बलिदान मुखर नहीं मौन होता है। त्याग कहने से नहीं करने से होता है। वे जानते थे कि भारत लौटने की अनुमति मिलना असम्भव है। संयोग से उस समय भाई परमानन्द, सर तेजबहादुर सप्रू और सी.एफ. एन्ड्रूज भी लन्दन में ही थे। तीनों ही लाला हरदयाल जी की योग्यता तथा देशभक्ति से परिचित थे। तीनों की पहुँच सरकार के उच्च अधिकारियों से भी थी। सभी ने अपने ढँग से लाला हरदयाल को भारत जाने की जोरदार सिफ़ारिश की। अन्ततोगत्वा कुछ शर्तों के साथ उन्हें भारत जाने की अनुमति मिल गई।

अनुमति सम्बन्धी ये दस्तावेज, जब लंदन में लाला हरदयाल के ठिकाने पर पहुँचे, तब तक वे विश्व सम्मेलन में भाग लेने फिलाडेल्फिया के लिए रवाना हो चुके थे। वहीं उन्हें यह समाचार मिला। तभी उनकी आँखों से खुशी के आँसू और मुँह से यह स्वर साथ ही निकले– 'ओह! अब मैं अपनी प्यारी मातृभूमि में लौट सकूँगा।' परन्तु यहाँ कई नगरों में उनके व्याख्यानों की घोषणा हो चुकी थी। अतः उन्होंने तीन महीने बाद लौटने का निश्चय किया और अपने भारतीय मित्रों को भी यह सूचना दे दी। भारत में भी जगह–जगह उनके स्वागत की तैयारी होने लगी।

3 मार्च 1939 की शाम तक लाला जी पूर्ण स्वस्थ एवं प्रसन्न थे। रात्रि के भोजनोपरान्त बिस्तर पर जाकर अगले दिन के लिए व्याख्यान हेतु नोटिस तैयार कर रहे थे। निरन्तर परिश्रम तथा परिभ्रमण के कारण परिश्रान्त तो थे ही, अतः कुछ ही पलों में कागज कलम मेज पर रख कर बिस्तर पर लेट गए। शायद विकराल काल इसी अवसर की ताक में था। जो काल, अपना जाल, भूख प्यास से निढ़ाल, कायाधिक्य से बेहाल, भारत माता के लाल, हरदयाल पर आपात्काल में भी नहीं फैंक सका। जो काल दिन के उजाले में इस महापुरुष के पास फटकने की हिम्मत न जुटा सका, उसी ने रात के अँधेरे में घात लगाकर अघात किया, और देखते ही देखते सब कुछ समाप्त...।'

सोचा था क्या, क्या हो गया।।।

4 मार्च 1939 को प्रातः काल लाला हरदयाल का अचेतन तन ही बिस्तर पर था। 'पंछी उड़ चुका था, पिंजरा खाली था। शायद विधाता की यही इच्छा थी।' 'वन्दे मातरम्।'

24/4 बिशन स्वरूप कालोनी
पानीपत–132 103

www.thearyasamaj.org

छत्रपति शिवाजी का राज्याभिषेक और व्यक्तित्व दर्शन

● प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे

छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा सन् 1659 में अफजल खाँ का वध और 1663 ई. के शाईस्ता खाँ की फजीहत किये जाने के पश्चात् मुगल बादशाह औरंगजेब बहुत ही क्रोधित हुआ और उसने मिर्जा राजा जयसिंह को शिवाजी को पराजित करने के लिए दक्षिण भेजा। राजा जयसिंह ने कूटनीति और धूर्तता से शिवाजी महाराज को मुगल बादशाह औरंगजेब को मिलने के लिए आगरा भेज दिया। औरंगजेब ने छल कपट कर शिवाजी को कैद कर लिया। 6 मास के उपरान्त शिवाजी बड़ी चालाकी और नाटकीय ढंग से आगरे से पलायन कर अपने स्वराज्य में लौट आए। इसके पश्चात् दो वर्षों तक स्वराज्य में शान्ति रही। औरंगजेब शिवाजी से संघर्ष करता हुआ थक चुका था और इसी कारण निरुपाय होकर उसने शिवाजी को राजा की उपाधि प्रदान कर दी। औरंगजेब ने कहा था– ''मेरे विरूद्ध जितने व्यक्तियों ने स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का प्रयास किया, उनमें से किसी को सफलता नहीं मिली। एक मात्र शिवाजी ही अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में सफल हो सका।''

इसके बाद शिवाजी ने दुबारा संघर्ष कर वे किले लौटा लिए जिन्हें राजा जयसिंह ने उनसे अपहृत कर लिया था। जब मुगल बादशाह की ओर से शिवाजी को राजा का दर्जा दिया गया तो उन्होंने स्वयं को राजा सिद्ध करने के लिए राज्याभिषेक करने का निश्चय किया। उन्होंने काशी के गागाभट्ट को बुलवाया और उनके पौरोहित्य में राज्य सिंहासनारूढ होकर विधि पूर्वक राज्याभिषेक करवाया। इस तरह 6 जून 1674 को छत्रपति शिवाजी महाराज धर्मशास्त्र की आज्ञा और विधिविधान के अनुसार क्षत्रिय कुलावतंस, सिंहासनाधीश इन दो उपाधियों से अलंकृत होकर मराठा साम्राज्य के राजाधिपति बन गए। इस प्रकार शिवाजी चारों ओर से मुगल साम्राज्य बीजापुर के सुल्तान गोआ के पुर्तगालियों और जंजीरा स्थित अबी सानिया के समुद्री डाकुओं से घिरे होकर और प्रतिरोध के बावजूद उन्होंने दक्षिण पश्चिम महाराष्ट्र में एक स्वतंत्र हिन्दू राज्य की स्थापना की। 6 वर्ष के पश्चात् जब 1680 ई. में उनकी मृत्यु हुई तब उनका राज्य बेलगाँव से लेकर तुंगभद्रा नदी के तट तक पश्चिमी कर्नाटक में फैला हुआ था।

तत्कालीन सूरत (गुजरात) का प्रेसिडेन्ट हेनरी ऑक्झेण्डेन 6 जून 1674 को शिवाजी के राज्याभिषेक समारोह में उपस्थित था उसने महाराज को नजराना पेश करते हुए नजदीक से देखा था। वह लिखता है– ''शिवाजी 47 वर्ष की उम्र के हैं और वे अत्यंत सुन्दर और प्रभावशाली है। उनके साथ चर्चा करने से मालूम हुआ कि वे बुद्धिमत्तावाले और चतुर वृत्ति के हैं। उनकी दृष्टि तेज, नाक सरल और बाँकदार है।

कॅरे नामक फ्रेंच यात्री ने शिवाजी को महामानव कहा है।

पांडीचेरी के गवर्नर मार्टिन ने कहा था– ''शिवाजी जैसा दूसरा नेता उस काल में नहीं हुआ है।''

शिवाजी के बारे में **इतिहासकार यदुनाथ सरकार** लिखते हैं– ''शिवाजी महाराज यथार्थ में व्यावहारिक आदर्शवादी थे, वे शेरशाह सूरी और रणजीत सिंह से भी महान थे तथा ओलिवर क्रामवेल और नेपोलियन से भी उनकी महानता की तुलना नहीं हो सकती, क्योंकि वे दोनों क्षुद्र अहंभाव से प्रेरित थे।

तत्कालीन मुगल सल्तनत का ब्योरा लिखने वाला साफी खाँ शिवाजी के बारे में लिखता है– '' शिवाजी ने यह निश्चय बना लिया था कि जब कभी उनके साथी लूट–पाट करें, वे मस्जिद या किसी स्त्री को कोई हानि न पहुँचाएँ...जब इनके सैनिक कुरान, हिन्दू या मुसलमान स्त्रियों को बन्दी बनाते तब वे स्वयं उनकी रखवाली करते थे।''

प्रसिद्ध इतिहासकार श्री महाजन कहते हैं– ''शिवाजी केवल मराठा जाति के ही निर्माणकर्ता न थे, अपितु वे मध्यकालीन भारतवर्ष के निर्माणकर्ता थे।''

– सीताराम नगर, लातूर

सांस्कृतिक पतन

● राजेन्द्र प्रसाद आर्य

2 फरवरी 1835 को लार्ड मैकाले ने ब्रिटिश संसद में एक वकतव्य दिया था जो इस प्रकार है–

''मैंने पूरे भारतवर्ष में चारों ओर भ्रमण किया है और अपने भ्रमणकाल के दौरान हमने एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं देखा जो भिखारी अथवा चोर हो, इस देश में इतनी सम्पदा है, यहाँ के लोगों का चरित्र इतना ऊँचा है और लोगों में इतनी योग्यता है कि मैं नहीं समझता कि इन्हें गुलाम बनाया जा सकता, जब तक कि इस देश की रीढ़ की हड्डी को तोड़ नहीं दिया जाय, जो इस देश की आध्यात्मिक व पैतृक सम्पति है। और इसलिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि उसकी प्राचीन शिक्षा प्रणाली तथा उसकी संस्कृति को बदल दें ताकि वह यह सोचने लगे कि जो कुछ विदेशी व आंग्ल है वह उनसे अधिक महान है। इस प्रकार वे अपना स्वाभिमान और अपनी स्वाभाविक संस्कृति को खो देंगे और सचमुच हमारी इच्छानुसार हमारे गुलाम बन जाएँगे।''

अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक अंग्रेज अफसर रावटे क्लाइव ने 1760 ई. में कलकत्ता में गायों की हत्या हेतु एक कत्लखाना खुलवाया, जबकि मुगलकाल में भी इस देश में गोहत्या नहीं होती थी। इस एक कत्लखाने से बढ़कर अंग्रेजों के शासनकाल में कुल 300 कत्लखाने खुल गए और आज जब हमारी अपनी सरकार है तो इस समय इस देश में हजारों की संख्या में रजिस्टर्ड कत्लखाने हैं, शायद 36000। भारत गोमांस निर्यात करने वाला प्रमुख देश बनकर ढ़ेरों सारी विदेशी मुद्राएँ अर्जित कर रहा है। एक आकलन के मुताबिक इस देश में प्रतिवर्ष लगभग 1 करोड़ गायों की हत्या की जा रही है, और लगभग इतनी ही गायें बांग्लादेश को भेजी जा रही हैं। वही दूसरी ओर स्थिति यह है कि दूध के अभाव में बच्चे कुपोषण के शिकार हो रहे हैं। इस देश में प्रत्येक 1 मिनट में 5 वर्ष तक के 3 बच्चे की मौत कुपोषण के कारण हो जाती है, अर्थात् प्रत्येक 1 घंटे में 180 और प्रतिदिन लगभग 4320 बच्चे।

दूसरा काम रावर्ट क्लाइव ने हमारे नैतिक पतन के उद्देश्य से कलकत्ता में ही एक विदेशी शराब की दुकान खुलवाई, इसके पहले अंग्रेज लोग ही सिर्फ अपने ही वास्ते विदेश से इसे मँगवाते थे। इस समय इस देश में लगभग 3–4 लाख तक विदेशी शराब की दुकानें हैं, जिससे करोड़ों लोग शराब खरीदकर अपना जीवन और जवानी दोनों ही बर्बाद कर रहे हैं। इस शराब से लाखों घर बर्बाद हो चुके हैं, और लाखों लोग बीमारियों से ग्रस्त होकर असमय ही मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं।

एक रिपोर्ट के मुताबिक इस देश में प्रतिवर्ष लगभग 1 लाख 40 हजार लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं जिसका मुख्य कारण होता है शराब।

अभी–अभी होली में सिर्फ उत्तर बिहार में 58 व्यक्ति सड़क दुर्घटनाओं में मारे गए हैं वहीं 500 लोग गंभीर रूप से घायल हुए जिसका कारण भी रहा है शराब। पता नहीं पूरे देश की स्थिति क्या रही होगी।

अंग्रेजों ने हमारे नैतिक पतन के ही उद्देश्य से एक और काम करके अपनी सारी हदें ही पार कर दी हैं। वह है कलकत्ता में ही एक वेश्यालय की स्थापना और इस वेश्यालय में करीब 200 महिलाओं को जबरन इस पेशे पर उतारा गया। आज इसका स्वरूप इतना विशाल हो गया है कि इस देश में इस समय करीब 20 लाख से भी अधिक वेश्याएं हैं। कालगर्ल्स की संख्या तो अलग है। सोचा जा सकता है कि रावर्ट क्लाइव को कितनी सफलता मिली है अपने मंसूबों में। ये वेश्याएं लोगों को यौनरोगी बनाकर उन्हें असमय ही मृत्यु की ओर ढकेल रही है।

आज इस देश में 55 लाख से भी अधिक लोग एड्स से ग्रस्त होकर जीवन और मृत्यु से संघर्ष कर रहे है।

आज वास्तव में हमारी सनातन वैदिक संस्कृति को नष्ट कर अंग्रेजों ने हमारी रीढ़ की हड्डी तोड़ डाली है, तभी तो हमें अपना कुछ भी अच्छा नहीं लगता और विदेशी चीजें हमें श्रेष्ठ लगती हैं। जिस वजह से तेजी से हम उन्हें अपना रहे हैं। विदेशी पहनावे और खान–पान की ही सिर्फ बात नहीं है, हमें विदेशी भाषा, विदेशी शराब, विदेशी सभ्यता, विदेशी कारें, विदेशी कुत्ते और यदि हम यह कहें तो शायद गलत नहीं होगा कि अगर विदेशी मेम हर किसी को उपलब्ध हो सके तो देशी बहुओं को कोई पूछेगा भी नहीं। विदेशी सभ्यता के आकर्षण ने हमें प्रायः सभी क्षेत्रों में प्रभावित किया है। ज़रा इसे देखें–

1. खान–पान और पहनावा–

विदेशी सभ्यता ने सर्वप्रथम हमारे खान–पान और पहनावें पर डाका डाला है हम अपने पारम्परिक पहनावें को छोड़कर विदेशी पहनावे सूट–बूट पहनने में गौरवान्वित होते हैं। लड़कियों पर तो इसके प्रभाव ने नारी गरिमा पर प्रश्नचिहन् ही लगा दिया है। उत्तेजक, भड़काऊ तंग और फूहड़ पहनावे में ये बालाएं खुलेआम नग्नता और अश्लीलता का प्रदर्शन कर रहीं हैं। पिछले कुछ वर्षों में यौन अपराधों में जो बेहताशा वृद्धि हुई है उसका एक कारण अश्लीलता भी है। इसे देखकर लगता है

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

www.thearyasamaj.org

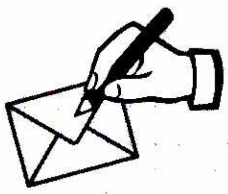

पत्र/कविता

"सृष्टि के आदि में ऋषियों व वेद ज्ञान की उत्पत्ति" पर शंका समाधान

'आर्य जगत्' साप्ताहिक पत्रिका 11-16 अगस्त 2013 के पृष्ठ संख्या-5 पर श्री मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून द्वारा लिखित उपरोक्त शीर्षक का लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें उन्होंने वेदोत्पत्ति के विषय में कुछ शंकायें व्यक्त की हैं और विद्वानों से समाधान की अपेक्षा की है।

मेरे अपने स्वाध्याय ज्ञानानुसार श्री मनमोहन कुमार आर्य जी की शंकाओं का समाधान निम्नप्रकार है:-

(1) **शंका**-हम चार ऋषियों को पूर्व कल्प की सबसे अधिक पवित्र आत्मायें मानते हैं, तो इसका अर्थ है कि ये लोग पूर्व कल्प में सर्वश्रेष्ठ मानव वा ऋषि आदि रहे होंगे और किसी न्यूनता के कारण इनकी मुक्ति न हो सकी, इस कारण यह चार पवित्रात्मायें इस सृष्टि के आदि में ईश्वर द्वारा उत्पन्न कर इनको एक-एक वेद का ज्ञान देकर अनुग्रहीत किया गया।

समाधान- यदि "पूर्व कल्प" का आशय 'विगत' कल्प से मानेंगे तो शंका उत्पन्न होगी। वास्तव में 'पूर्व कल्प' का आशय उस गत कल्प से है जिसमें ये पुण्य आत्मायें मानव शरीर में थीं।

सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास नौ पृष्ठ 199 पर मुक्ति काल की गणना इस प्रकार की है-

1 चतुर्युगी -43,20,000 वर्ष
1 अहोरात्र -2000x 43,20,000
764,00,00,000 वर्ष
1 महीना-30x5,64,00,00,000 वर्ष
1 वर्ष -12x30x5,64,00,00,000 वर्ष
परान्तकाल-100x12x30x5,64,00,00,000 वर्ष
-31,10,40,00,00,00,000 वर्ष
-36,000 अहोरात्र का कल्प
-मुक्ति में सुख भोगने का समय

अतः चारों ऋषि मुक्ति का सुख भोगने के बाद पुनः उनमें स्थित जीव को मानव योनि प्राप्त हुई। ईश्वर ने उन्हें अनुग्रहीत नहीं किया बल्कि न्यायसंगत फल प्रदान किया।

(2) **शंका**-ऐसी असंख्य वा अनन्त पृथिवियाँ इस ब्राह्मण्ड में हैं, इन पर वेदों का ज्ञान देने के लिए परमात्मा को अनन्त पवित्रात्माओं की आवश्यकता होती होगी।

समाधान- पृथिवियाँ अनन्त नहीं, असंख्य हैं। वैज्ञानिक खोजों के अनुसार "एक अरब पच्चीस करोड़" पृथिवियाँ आकाश गंगा में हैं। हो सकता है कुछ न्यून या अधिक हों परन्तु अनन्त नहीं हैं।

मुक्तिकाल 36,000 कल्प का होता है। यदि एक युग में एक पवित्र आत्मा मानी जावे तो 36,000 कल्पों में पवित्रात्मा बराबर होंगी 4x2,000x36,000 -28,80,00,000 (अट्ठाइस करोड़ अस्सी लाख) इनको सात करोड़ बीस लाख पृथिवियों पर चार-2 आत्माओं के आधार पर भेजा जा सकता है। परन्तु सभी पृथिवियों पर एक साथ एक ही काल में प्रलय नहीं होती। अतः ईश्वर व्यवस्था में कोई व्यवधान नहीं आता।

(3) **शंका**- सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा अन्य पशु -पक्षी व कीट -पतंगों की सृष्टि भी तो करता है। तो क्या वह सब भी पवित्रात्मासें नहीं होतीं?

समाधान- पशु-पक्षी व कीट-पतंगे भोग योनियाँ हैं। परन्तु इनके जीवों को विगत मानव जन्म के कर्म-फलानुसार गर्भावस्था का कष्ट ही नहीं भोगना पड़ता। बल्कि युवावस्था तक तमसावरण में रहना पड़ता है।

(4) **शंका**-ब्रह्मा जी को वेदों का ज्ञान परमात्मा से नहीं हुआ।

समाधान- ब्रह्मा जी को वेदों का ज्ञान चारों ऋषियों से ही प्राप्त हुआ था।

(5) **शंका**-ब्रह्मा जी को वेद मंत्रों की भाषा अर्थात शब्द अर्थ-सम्बन्ध का ज्ञान भी क्या ऋषियों ने कराया? अथवा भाषा व शब्द-अर्थ-सम्बन्ध का ज्ञान उन्हें परमात्मा से ही हुआ होगा। यही समस्या ऋषियों के अतिरिक्त जो युवा स्त्री-पुरुष अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न किये, उन्हें भाषा ज्ञान परमात्मा से हुआ अथवा ऋषियों से?

समाधान- ज्ञान दो प्रकार का होता है। (1) स्वाभाविक जैसे निद्रा, भोजन इच्छा, मैथुन, भय आदि। (2) नैमित्तिक-भाषाज्ञान, सम्बन्धज्ञान, आचरण आदि।

नैमित्तिक ज्ञान किसी अन्य के द्वारा ही कराया जाता है जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। अतः ब्रह्मा को भाषा अर्थात शब्द, अर्थ-सम्बन्ध का ज्ञान ऋषियों ने ही कराया। ब्रह्म ने अनेकों को समूह में पढ़ाया। ऋषियों ने भी अनेकों को पढ़ाया होगा परन्तु ब्रह्मा के सदृश अन्य कोई न रहा होगा। चार ऋषियों ने ही पठन-पाठन की विधि से ज्ञान दान की प्रक्रिया आरम्भ की थी। इसमें शंका का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

मानव सृष्टि केवल त्रिविष्टप (तिब्बत) देश में हुई और आदि में मानव संख्या अत्यन्त न्यून थी।

चारों ऋषियों को अन्य वेद के ज्ञान की आवश्यकता ही न थी। उन्होंने ज्ञान प्राप्त करके ज्ञान दान आरम्भ कर दिया। जैसे वर्तमान में विज्ञान का प्राध्यापक विज्ञान पढ़ाता है, कला का प्राध्यापक कला पढ़ता है, भाषा का प्राध्यापक भाषा पढ़ाता है। परन्तु प्रारम्भिक ज्ञान सभी विषयों का सभी को होता है। इसी प्रकार बहुत से मन्त्र चारों वेदों में हैं जिनके द्वारा चारों ऋषियों को सभी विषयों का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त था। लेकिन अपने वेद ज्ञान के वे विशेषज्ञ थे। ब्रह्मा ने चारों से ज्ञान प्राप्त किया इसलिए वह चारों वेदों के ज्ञाता हो गये। वर्तमान में भी कुछ व्यक्ति तीन या चार विषयों में परास्नातक की उपाधि प्राप्त कर लेते हैं।

भूतकाल में कई ऋषियों पाणिन, पतंजलि,कणाद, गौतम, यास्क, यासवल्क्य आदि ऋषियों ने योग के द्वारा समाधि अवस्था में ईश्वर से साक्षात कर विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की।

महर्षि दयानन्द ने भी समाधि अवस्था मे ईश्वर से मन्त्रों का हिन्दी भाषा में अर्थ जान कर वेद भाष्य किया है। परन्तु ज्ञान प्राप्त होता है कर्म फलों के अनुसार ही ईश्वर से।

महर्षि दयानन्द भवन
3/5 आसफ अली मार्ग
नई दिल्ली - 110002
मो. 09868720739

****

दयानन्द की कहानी

भूले भटके लोगों से हमने भी सुनी कहानी थी,
दयानन्द तुमने ही भारत की गरिमा पहचानी थी।

मद, मत्सर, आलस ने आकर तन मन को था जकड़ लिया,
अज्ञान अशिक्षा, लोलुपता ने जन-जन को था पकड़ लिया।
पड़े दासता में कब से थे ये विपन्न भारतवासी,
उनके लिये स्वर्ग था केवल या तो काबा या काशी।
तुमने भारत के लोगों की कमज़ोरी पहिचानी थी।। भूले....

सच्चे योगी तुमने हमको ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाया,
अन्धकार में जो सोए थे घर घर जाकर उन्हें जगाया।
गूँज उठा था गगन तुम्हारे ओम् ध्वनि के नारों से,
भौचक्के हो गये विधर्मी तेरे तर्क प्रहारों से।
मुल्लाओं पादरियों की भी बन्द हुई मनमानी थी।। भूले....

तुम्हें कहा था मन्दिर के या मठ के स्वामी बन जाओ,
सतत् साधना करके पावन ब्रह्मतेज को पा जाओ।
त्याग-मूर्ति तुमने इन सबको तृण समान ही त्याग दिया,
पर हित में तुम दर दर घूमे वैभव से वैराग्य लिया।
सुख न मिला बचपन में कुछ भी, दुःख में गई जवानी थी।। भूले...

तेरी ललकारों के आगे गुन्डे कभी न टिक पाये,
छोड़ भगे उन हथियारों को, जिन को अपने संग लाये
पहिया पकड़ा जिस बग्घी का, हिल न सकी वह तिल भर भी
घोड़े बढ़ न सके आगे को कोचवान से पिटकर भी।
तेरा पौरुष, तेरी हिम्मत, तेरी अमिट निशानी थी।। भूले...

निशा जागरण करके तुमने सच्चे-शिव को पहिचाना।
नयन हीन के पैर पकड़ कर वेद ज्ञान तुमने जाना।
कलम उठाई जिस दिन तुमने फैल गया सत्यार्थ प्रकाश,
जिसने भेद बताया सबका स्वर्ग, नर्क, पृथ्वी, आकाश
भारत का भाग्य पलटने की तुमने जीवन में ठानी थी।। भूले...

तुमने कहा 'ज्ञान को पालो' तुमने कहा वेद पढ़ डालो,
'सर्वेभवन्तु सुनः' का बस एक मंत्र ही मन में गा लो।
भारत के अतीत गौरव की रक्षा तुम करते, रहना
अत्याचारी हो बलशाली, तो भी तुम लड़ते रहना।
इसी आन पर लड़ते-लड़ते तुम को जान गँवानी थी।। भूले....

जाओ ऋषिवर, याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
दीपक, दीप्त करेगी युग-युग तेरी दिव्य दीप बाती
स्थापित कर यह 'समाज' अपना स्मारक आप बनाना था,
प्राण देश हित देते रहना, यही मंत्र बतलाना था।
दिखा गये पथ, सिखा गये हमको जो सीख सिखानी थी।। भूले....

अम्बा प्रसाद शर्मा
भीलवाड़ा

☞ पृष्ठ 9 का शेष

सांस्कृतिक पतन

कि इनके अभिभावकों की भी इसमें मौन स्वीकृति है, अथवा वे मजबूर हैं।

खान–पान में भी हमें अपना पारम्परिक सात्विक आहार रास नहीं आता है, और माँस, मछली, अंडा, मुर्गी और शराब को हम तेजी से अपना रहे हैं। इस अभक्ष्य आहार और शराब के सेवन की वजह से ही हमारी रोग निरोधक क्षमता तेजी से घट रही है। जिस वजह से हम रोगग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। आज 60–65 वर्ष में ही लोग जाने की तैयारी करने लगते हैं और 70–75 वर्ष में चले भी जाते हैं। जबकि ईश्वर ने हमें 100 वर्ष जीने के लिए अधिकृत किया है। अंतिम कुछ वर्ष हम घर में अथवा अस्पताल में मृत्यु शैय्या पर गुजारते हैं।

2. भाषा पर कुठाराघात –

आज अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने में हम अपनी शान समझते हैं। अगर अंग्रेजी हमें ठीक से नहीं आती तो अंग्रेजी शब्दों का हम अधिक से अधिक प्रयोग कर अपने को भी अधिक एडवांस समझते हैं। यह अंग्रेजी शिक्षा का ही प्रभाव है कि बच्चे भी जिन्दा बाप को डेड और माँ को ममी से सम्बोधित करते हैं। अंकल और आंटी में ही बच्चे सारे रिश्ते नातों को समेट देते हैं। इससे ज्यादा अपनी राष्ट्रभाषा का अपमान और क्या हो सकता है कि हमारे संसद में भी अंग्रेजी का ही बोलवाला है और हमारे प्रधानमंत्री भी लोगों को अंग्रेजी में ही सम्बोधित करते हैं। यह सब मैकाले की शिक्षा प्रणाली का ही परिणाम है।

3. सामाजिक सद्भाव और शांति पर प्रभाव –

जब हमारी संस्कृति ही नष्ट हो गई है तो हमारे शुभ संस्कार कहाँ से बचेंगे। आज पूरे देश में हत्या, लूट बलात्कार, किडनैपिंग, रेप और गैंगरेप का जो बाजार गर्म है उसके पीछे का मूल कारण है, अपनी संस्कृति से बहुत दूर चले जाना। आज दिल्ली में हुआ दामिनी रेप इसका ज्वलंत उदाहरण है। रेप और गैंगरेप का हमारी संस्कृति में कोई स्थान नहीं रहा है।

4. लव का नशा और रिश्ते में कड़वाहट –

विपरीत लिंग के प्रति स्वाभाविक आकर्षण होता है। पर आज लव का नशा युवाओं में इतना परवान चढ़ गया है कि इसके प्रभाव में तथा विदेशी सभ्यता से प्रेरित होकर युवा वर्ग विवाहपूर्व अल्पवयस्क अवस्था में ही एक दूसरे के आगोश में आकर अपनी संस्कृति की मार्यादाओं को ही चिढ़ा रहे हैं। मानो हमारे पूर्वज शायद लव करना जानते ही नहीं थे। यह लव के नाश का ही प्रभाव है कि आज लाखों लड़कियाँ कुआँरी ही माँ बनकर अपनी नाजायज सन्तानों की भ्रूणहत्या का पाप भी कर रही हैं। बहुत जल्द ही जब लव का नशा समाप्त हो जाता है तो स्थिति डाइवोर्स तक पहुँच जाती है। इन असफल शादियों की वजह से कितनी ही लड़कियों को आत्महत्या कर लेनी पड़ती है। कितनी ही लड़कियाँ परित्यक्त जीवन जी कर अपने भाग्य पर आँसू बहा रही हैं। हमारी संस्कृति में विवाह जीवन भर के लिए होता है न कि आज इसे छोड़ा, उसे पकड़ा, उसे छोड़ा, और फिर तीसरे को पकड़ा। इसे जीवन भर प्रयोग करते रहते हैं।

आज विदेशी संस्कृति के रंग में रंगकर हम अपने को इतने आधुनिक और नए समझने लगते हैं कि हमारे माँ–बाप ही पुराने लगने लगते हैं।

5. कर्मकाण्डों पर दुष्प्रभाव –

विदेशी संस्कृति के प्रभाव से हमारे पूजा पाठ और कर्मकाण्ड भी नहीं बचे हैं। हमारी संस्कृति में अग्नि का बहुत ही महत्त्व है। हम प्रतिदिन की शुरूआत और सभी संस्कार अग्निहोत्र यज्ञ से करते थे। पर आज दो संस्कार ही अग्नि के प्रयोग से होते हैं। पहला विवाह के समय अग्नि के फेरे लेकर और दूसरा अन्त्येष्टि में अग्नि में भश्म होकर पंचतत्त्वों में विलीन होने के समय। शेष सभी संस्कारों एवं पूजा पाठ के समय में हम अगरबत्ती और मोमबत्ती का ही प्रयोग करते हैं। जिसका न तो कोई धार्मिक महत्त्व है और न ही वैज्ञानिक महत्त्व। जन्मदिन मनाने के समय भी अग्निहोत्र यज्ञ से नहीं बल्कि मोमबत्ती के द्वारा करते हैं, और वो भी मोमबत्ती जलाकर नहीं बल्कि जलती हुई मोमबत्तियों को बुझाकर।

उपरोक्त सभी प्रयास हमारी संस्कृति के पतन के हैं। अतः हम अपनी संस्कृति को समझें और इसे ही अपनाएं।

आर्य समाज, मुजफ्फरपुर
सम्पर्क–09835206688

☞ पृष्ठ 4 का शेष

'सब सत्य विद्या और जो...

देह को धारण करते हुए और चेष्टा करते हुए इत्यादि विषय को जाननेवाला भी कोई योग्य विद्वान् ही होता है।

तात्पर्य यह कि जीवात्मा अपने सूक्ष्म शरीर के साथ, परमेश्वर के बनाये हुए नियम के अनुसार ही स्थूल शरीर का निर्माण करता है। ये जितनी योनियों के आकार प्रकार बने हैं। उन सबकी आकृति परमेश्वर के न्याय नियम द्वारा ही बनी है। आत्मा तो अपने पूर्व कर्मानुसार केवल उन योनियों में जाकर उन्हीं जैसे आकार वाले शरीर को धारण कर अपने कर्मों के फलों को भोगता रहता है। जब उनमें से किसी एक योनि में रहकर उसका भोग समाप्त हो जाता है तब उसके आगे के लिए अन्य किसी निम्नयोनि में न जाकर उसे पुनः मानवयोनि में ही जन्म लेना पड़ता है। इस प्रकार ईश्वरीय नियम उसे बार–बार मानव योनि इसलिये प्राप्त कराती है ताकि वह विविध विद्या विज्ञान द्वारा अपने संसार, माता–पिता, पुत्री–पुत्र आदि को देखते हुए आध्यात्मिक ज्ञान, योग यज्ञ द्वारा सृष्टिकर्ता ईश्वर को समझे तथा प्रणव का जप, ध्यान करता रहे ताकि **''असतो मा सद्गमय, तमसोमा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतंगमय''** अर्थात् अंत में उतमसद् गति को प्राप्त हो।

मु.पो. मुरारई, जिला–वीरभूम
(प. बंगाल) पिन–731219
मो. 8158078011

☞ पृष्ठ 6 का शेष

भारतीय स्वात्रलय ...

अनेक स्कूल–कॉलेजों तथा सामाजिक व राजनीतिक संस्थानों में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इनका सारा आर्य परिवार ही देश भक्ति और समाज सुधार में अग्रणी रहा। इनकी माता श्रीमती वेद कुमारी भी बचपन से ही राष्ट्रीय तथा समाज सुधार के कार्यों में व्यस्त रहीं। उन्हें भी आजादी के संघर्ष में कई बार जेल जाना पड़ा।

एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय तथ्य यह है कि सत्यवती जी की दोनों बहिनें ऊषा तथा कौशल्या भी राष्ट्रीय कार्यों से लिप्त होने के कारण जेल के सीखचों में बंद रहीं। संभवतः विश्व की यह पहली महत्त्वपूर्ण घटना है जब–सत्यवती जी, उनकी दोनों बहिनें और उनकी माता जी ने घरबार की चिन्ता छोड़ स्वतंत्रता के यज्ञ में स्वयं की आहुति दे दी। एक बार तो ये चारों आर्य देवियाँ एक ही समय में ब्रिटिश सरकार के दमन का विरोध करते हुए लम्बे समय तक जेलों की अधेरी और घुटनभरी कोठरियों में बन्द रहीं। यह कोई साधारण घटना नहीं है–सुनकर दिल की धड़कनें तेज हो जाती हैं। तनिक गहराई से सोचिए आज़ादी प्राप्त करने के लिए क्या–क्या और कैसी–कैसी मुसीबतें झेलनी पड़ी हैं? क्या आज के ये छुटभैया नेता कहलाने वाले इनके बलिदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।

ऐसे त्यागी, तपस्वी कर्मठ और देशभक्त आर्य परिवार को हमारा बार–बार श्रद्धा सहित नमन। बहन सत्यवती जी के प्रति सादर श्रद्धांजलि–

अगणित कष्ट सहे जीवन भर,
देश भक्ति की प्रीति निभाई।
पहन हथकड़ी के आभूषण,
स्वतंत्रता की ज्योति जगाई।।
कभी न त्यागा सत्पथ तुमने,
बाधाओं को गले लगाया।
भारत माँ की आजादी हित,
अपना सारा सुख बिसराया।
इस छोटी सी आयु में भी,
वायु का रूख बदल दिया था।
जेलों को समझा था मंदिर–
स्वतंत्रता–पथ सरल किया था।

मानव संकल्प सोसायटी (रजि.)
पानीपत–132103
मो. : 09034507448

खेड़ा खुर्द में अखिल भारतीय संस्कृत व्याकरण प्रतियोगिता

उस आर्य गुरुकुल की एक विज्ञप्ति के अनुसार प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्रीमद् दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं श्री रामकृष्ण गोशाला खेड़ा–खुर्द दिल्ली –82 में अखिल भारतीय अन्तर गुरुकुलीय संस्कृत व्याकरण प्रतियोगिता (अष्टाध्यायी–कण्ठस्थीकरण, प्रथमावृत्ति, धातुवृत्ति एवं काशिका आगामी 27 व 28 दिसम्बर 2013 को आयोजित की जा रही है। इच्छुक छात्र सम्पर्क करके। विस्तृत नियमावली प्राप्त कर सकेते है

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 20-21 /11/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी ने मनाया 136वां स्थापना दिवस

उत्तरी भारत की सुप्रसिद्ध बाल कल्याण कारी एवं समाजसेवी संस्था आर्य अनाथालय की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं 136 वर्ष पूर्व सन् 1877 के 26 अक्टूबर को की थी। 20 अक्टूबर 2013 को इस संस्था ने अपना गौरवपूर्ण 136वां स्थापना दिवस विशेष यज्ञ सत्संग के द्वारा घूमघाम से मनाया। इस अवसर पर आश्रम के बालक बालिकाओं के अतिरिक्त समस्त कार्यकर्ताओं के परिवार भी उपस्थित थे। आश्रम प्रांगण में स्थानीय डी.ए.वी. कमेटियों के आधार स्तम्भ समाज सेवी सज्जन पं. सतीश कुमार शर्मा एडवोकेट (सपत्नीक) यज्ञ के यजमान बने। आश्रम के अवैतनिक स्वास्थ्य अधिकारी (M.O) डॉ. के.सी. अरोड़ा, आर्यसमाज के मंत्री, श्री मनोज आर्य सहित फिरोजपुर शहर छावनी की सभी डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसीपल तथा स्टॉफ मेम्बर्स तथा अनेकों गणमान्य जन इस अवसर

पर उपस्थित थे। मान्य शर्मा जी एवं समस्त आगतुक जनों का संस्था की प्रबंधक डॉ. सतनाम कौर ने हार्दिक स्वागत किया। पं. सतीश शर्माजी ने अपने भाषण में आश्रम विकास एवं बच्चों के रख रखाव को देखकर प्रसन्नता प्रकट की तथा प्रबंधक का धन्यवाद किया। आश्रम द्वारा संचालित गोशाला के नवीन भवन, तथा आश्रम की बालिकाओं के लिए बन रहे नवीन प्रसाधक कक्ष तथा भोजनशाला के कार्य से सन्तुष्ट होते हुए उन्होंने सभी से इस आश्रम की आर्थिक सहायता करने की अपील की। शर्मा जी ने सभी का हार्दिक धन्यवाद भी किया। जलपान के साथ यज्ञ सत्संग सम्पन्न हुआ।

सिंधी समाज के गिरधारी पंजवानी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया

संत कंवरराम सिंधी धर्मशाला पंचायत समिति की ओर से संत कंवरराम साहेब के 74वें वर्सी महोत्सव के अवसर पर समिति के अध्यक्ष गिरधारीलाल पंजवानी को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डी.एस. सी.एल. के वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक के.के. कौल व आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जनदेव चड्ढा द्वारा महर्षि दयानन्द रचित अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया।

इस अवसर पर गिरधारीलाल पंजवानी ने कहा कि आर्य समाज असहायों की सहायता करता है। श्री कौल ने कहा कि समाजहित में किये जा रहे कार्य मानवता की सच्ची सेवा हैं।

सिंधी पंचायत समिति द्वारा आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, विज्ञाननगर आर्य समाज के प्रधान जे.एस.दुबे, महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के संस्थापनक प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक को शॉल ओढ़ाकर स्मृति चिन्ह भेंट किया।

डी.ए.वी. कुमार गंज (फैज़ाबाद) में हुई पर्यावरण संरक्षण गोष्ठी

नरेन्द्र देव डी.ए.वी. सीनियर सेकण्डरी स्कूल, कुमारगंज फैजाबाद (उ.प्र.) में पर्यावरण संरक्षण गोष्ठी एवं पौधा रोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आशीष त्रिपाठी, प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैक, कुमारगंज फैजाबाद (उ.प्र.) ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विद्यालय परिसर में पौधा रोपण किया। अपने वक्तव्य में श्री त्रिपाठी जी ने स्वच्छ विद्यालय परिसर एवं चतुर्दिक हरीतिमा को देखकर विद्यालय की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि आज पर्यावरण में विभिन्न प्रकार के प्रदूषण एवं गैसों के बढ़ने के कारण ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रहा है जिसको बचाने के लिए विद्यालय का यह आयोजन प्रशंसनीय है। विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. ओ.पी मिश्र, तथा अन्य सम्मानित अतिथियों सहित विद्यालय के शिक्षकों ने इस अवसर पर वृक्षारोपण किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. ओ. पी. मिश्र ने बताया कि विद्यालय परिसर में अब तक लगभग 1500 पौधे लगाये जा चुके हैं तथा इस सत्र में विभिन्न प्रजातियों के लगभग 200 पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। मुख्य अतिथि ने अपने अभिभाषण में कहा कि हमें प्रकृति को दासी नहीं स्वामिनी समझना

चाहिए। पौधा रोपण के द्वारा ही हम उनका समुचित रख–रखाव करके प्रकृति की ओर मुड़ सकते हैं। अन्त में प्रधानाचार्य ने समस्त अतिथियों का आभार प्रकट किया।

ग्रामदेवी (छतीसगढ़) में पंचदिवसीय योग, व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुरुकुल आश्रम आमसेना के तत्वावधान में छ.ग.के महासमुन्द जिलान्तर्गत ग्राम देवरी के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पंचदिवसीय योग, व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 600 बालक–बालिकाओं को योग, आसन, प्राणायाम, जूडो, कराटे, कूम्फू, तलवारबाजी, लाठी चालन, दण्ड–बैठक, सूर्यनमस्कार, भूमिनमस्कार आदि आत्मरक्षा के गुर सिखाये गये।

शिविर का समापन समारोह माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में रखा गया, जिसमें अध्यक्ष श्री सतीश जग्गी जी के सहित अनेक गणमान्य सज्जन तथा गुरुकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक एवं संचालक स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती उपस्थित थे।

इस समापन के अवसर पर आदर्श कन्या गुरुकुल की आचार्य पुष्पा जी के उद्बोधन एवं कन्या गुरुकुल के ब्रह्मचारीणियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किया गया। ग्रामीणों ने इस अभूतपूर्व व्यायाम प्रदर्शन की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**